• जयपुर, मंगलवार, 27 फरवरी 24 • वर्ष 01 • अंक 189 • पृष्ठ : 8 • मूल्य : 1 रुपये

www.chamaktarajasthan.com | Email : chamaktarajasthan8789@gmail.com

डाक पंजीयन संख्याः RJ/JPC/D19/2022-23

RNI. No. RAJHIND/2011/40950

दैनिक

राज्य तथा केंद्र द्वारा मान्यता प्राप्त

सच के साथ मजबूती से बढ़ाये क़दम

चमकता राजस्थान

जयपुर से प्रकाशित एवं प्रसारित

विज्ञापन के लिए : 93145 05000

अजमेर, सीकर, झुंझनुं, सवाईमाधोपुर, चित्तौड़गढ़, बूँदी, धौलपुर, हिंडौन, भरतपुर, झालावाड़, जोधपुर, बीकानेर से प्रसारित

सुविचार

''सत्य को हज़ार तरीकों से बताया जा सकता है, फिर भी हर एक सत्य ही होगा।''

● **स्वामी विवेकानंद**

पेज @3 फायर ब्रिगेड का दुरुपयोग सरकारी तंत्र द्वारा डकैती...

पेज @4 फायरिंग व लूट के प्रयास की घटना के 5 आरोपी गिरफ्तार, एक देशी...

पेज @8 महिलाओं , बच्चों और किशोरी बालिकाओं के समुचित विकास के लिए...

निवाई देरी पहुंचने पर मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा ने मांगी माफी, शीघ्र ही निवाई में एक बार फिर आने का किया वादा

चमकता राजस्थान

निवाई(का.स.)। प्रदेश के मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा अपने निर्धारित समय 6 बजे से फरीच साढ़े 4 घंटे देरी से निवाई पहुंचे। मुख्यमंत्री सभा स्थल पर जैसे ही 10.30 बजे पहुंचे वैसे ही वहां पर मौजूद करीब डेढ हजार लोगों की भीड़ मुख्यमंत्री के समर्थन में नारे लगाने लगी। मुख्यमंत्री का पालिका अध्यक्ष के नेतृत्व में कार्यकर्ताओं ने 51 किलो फूलों की माला से स्वागत किया। इस अवसर पर मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा ने सभा स्थल पर देरी से पहुंचने के लिए आमजन से मंच के माध्यम से माफी मांगी और कहा कि मेरे प्रिय परिवारजनों दिन में कई अमारोह व स्वागत के कार्यक्रमों की व्यस्तता के चलते आभार सभा में पहुंचने में देर हो गई। नियमों की पालना करते हुए आप सभी को समय न देने हेतु सभी से मैं क्षमा चाहता हूं। उन्होंने कहा कि मैं वादा करता हूं कि आप सभी के समक्ष पुनः लौटूंगा व सभी का स्नेहाशीष प्राप्त करते हुए क्षेत्र को विकास की बड़ी सौगात समर्पित करूंगा। मुख्यमंत्री ने माइक बंद हो

जाने के बाद मंच से जनता को आश्वासन दिया कि वे दुबारा शीघ्र ही निवाई आएंगें और अधिक समय तक रुककर समस्याओं को सुनेंगे। मुख्यमंत्री सभा स्तर पर 1050० बजे पहुंचे और 13 मिनट ही रुके। सांसद सुखवीरसिंह जौनापुरिया ने कहा कि 21 जिलों को बहुत बड़ी सौगात मिली है। वो दिन दूर नहीं कि लाखों हैक्टेयर भूमि सिंचित होगी। किसानों को मजबूत करने के लिए प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने ईआरसीपी परियोजना स्वीकृत्ति कर 21 जिलों की जनता के साथ न्याय किया है। दिल्ली मुबंई एक्सप्रेस हाइवे पर केन्द्रीय सडक व परिवहन मंत्री नितिन गडकरी ने अद्वितीय कार्य किया है। विराटनगर विधायक कुलदीप घनकड ने कहा कि कांग्रेस सरकार ने प्रदेश में पांच वर्ष तक पाप किया है। किसान को कांग्रेस ने झूठ करार दिया। ईआरसीपी योजना भाजपा सरकार की ही देन है। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने 28 वर्षों की ईआरसीपीयोजना स्वीकृति कर 21 जिले वासियों को विशेष सौगात दी है। मुख्यमंत्री के आगमन की सूचना मिलते ही इधर उधर बैठे हुए सभी कार्यकर्ता सभा स्थल पर पहुंच गए। सभा स्थल पर शाम 5 बजे से ही भाजपा कार्यकर्ता व आम जनता सभा स्थल पर पहुंचने लग गई थी और 5.30 बजे तक सारा पांडाल खचाखच भर गया था।

मुख्यमंत्री के पहली चार निवाई आगमन की वजह से भाजपा कार्यकर्ताओं व नेताओं में भारी जोश नजर आया और हर कोई मुख्यमंत्री भवनलाल शर्मा को देखने को आतुर थे। मुख्यमंत्री की जनसभा के दौरान जिला प्रमुख सरोज बंसल, पूर्व विधायक अजीतसिंह मेहता, जिलाध्यक्ष राजेंद्र पराणा, प्रधान रामवतार लगडी, शंकरलाल ठाडा, रामनिवास गुर्जर, नरेश बंसल, लक्ष्मी जैन, भाजपा महिला मोर्चा जिलाध्यक्ष राजकुमारी शर्मा,सीताराम वर्मा, संभागीय आयुक्त महेश शर्मा, पुलिस महानिरीक्षक अजमेर लता मनोज, जिला कलक्टर सैम्या झा, पुलिस अधीक्षक संजीव नैन, एडीएम सुरेश चौधरी, अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक आदर्श चौधरी, एसडीएम समंदर सिंह, एसडीएम कपिल शर्मा निवाई एसीएम सरिता मल्होत्रा, डीएसपी महावीर सिंह, थानाधिकारी हरिराम वर्मा सहित जिले भर के वरिष्ठ भाजपा नेता व कई आला अधिकारी मौजूद थे। सभा स्थल से मुख्यमंत्री के चले जाने के बाद प्रशासन ने चैन की सांस ली। सुप्रीम कोर्ट के आदेशों की पालना में माइक सेट किए बंदः मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा की सभा में नेताओं के पास चल रहा था इसी दौरान जैसे ही 10.30 बजे सुप्रीम कोर्ट के आदेशों की पालना में सभा स्थल के बाहर के सभी माइक बंद कर दिए गए।

पीएम मोदी ने किया भारत टेक्स 2024 का उद्घाटन

नई दिल्ली/एजेंसी।

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने आज यानी 26 फरवरी को नई दिल्ली स्थित भारत मंडपम में आयोजित 'भारत टेक्स 2024' का उद्घाटन किया. बता दें कि यह वस्त्र क्षेत्र से जुड़े वैश्विक स्तर के अब तक के सबसे बड़े कार्यक्रमों में से एक है. 'भारत टेक्स 2024' का आयोजन 26-29 फरवरी, 2024 के दौरान किया जा रहा है.

बता दें कि प्रधानमंत्री के 5 एफ विजन से प्रेरणा लेते हुए, इस कार्यक्रम में फाइबर, फैब्रिक और फैशन के जरिए खेत से लेकर विदेश पर एकीकृत रूप से ध्यान केन्द्रित किया गया है. जो संपूर्ण वस्त्र मूल्य श्रृंखला को कवर करता है. इल दौरान पीएम मोदी ने कहा कि 'आज का कार्यक्रम अपने आप में बहुत खास है, खासकर इसलिए क्योंकि यह भारत के दो सबसे बड़े प्रदर्शनी केंद्रों, भारत मंडपम और यशोभूमि में एक साथ आयोजित किया जा रहा है'

उन्होंने आगे कहा कि 'आज का ये आयोजन सिर्फ एक टेक्सटाइल एक्सपो भर नहीं है. इस

आयोजन के एक सूत्र से कई चीजें जुड़ी हुई हैं. भारत टेक्स का ये सूत्र भारत के गौरवशाली इतिहास को आज की प्रतिभा से जोड़ रहा है. भारत टेक्स का ये सूत्र टेक्नोलॉजी को संस्कृति के संग पिरो रहा है. भारत टेक्स का ये सूत्र स्टाइल, सस्टेनेबिलिटी, स्केल और स्किल को एक साथ लाने का सूत्र है.'

पीएम मोदी ने आगे कहा कि 'परिधान बनाने वाले हर 10 साथियों में से 7 महिलाएं हैं और हैन्डलूम में तो इससे भी ज्यादा है. टेक्सटाइल के अलावा खादी ने भी हमारे भारत की महिलाओं को नई शक्ति दी है. मैं ये कह सकता हूं कि बीते 10 वर्षों में हमने जो भी प्रयास किए, उसने खादी को विकास और रोजगार दोनों का साधन बनाया है.'

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने आग कहा कि 'आज भारत, दुनिया में कॉटन, जुट और सिल्क के बड़े उत्पादकों में से एक है. लाखों किसान इस काम में जुटे हैं. सरकार आज लाखों कॉटन किसानों को सपोर्ट कर रही है, उनसे लाखों क्विंटल कॉटन खरीद रही है. सरकार ने जो कस्तूरी कॉटन लॉन्च किया है, वो भारत की अपनी पहचान बनाने की ओर एक बड़ा कदम होने वाला है. देश को ग्लोबल हब बनाएंगे.'

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी सोमवार को दिल्ली के भारत मंडपम में देश में आयोजित होने वाले अब तक के सबसे बड़े वैश्विक कपड़ा कार्यक्रमों में से एक, भारत टेक्स-2024 का उद्घाटन करेंगे। सोमवार को सोशल मीडिया पर पीएम मोदी ने एक्स पर लिखा, आज सुबह 10:30 बजे भारत टेक्स 2024 का उद्घाटन करूंगा। यह मंच भारत की जीवंत कपड़ा विरासत और नवाचार का प्रदर्शन करेगा। आइए हम सब मिलकर कपड़ा क्षेत्र में व्यापार, निवेश और निर्यात के लिए एक उज्जवल भविष्य बुनें।

वैभव गहलोत का राज़स्थान क्रिकेट एसोसिएशन (आरसीए) के अध्यक्ष पद से दिया इस्तीफा

चमकता राजस्थान

जयपुर (चमकता)। राजस्थान क्रिकेट एसोसिएशन के अध्यक्ष व पूर्व मुख्यमंत्री अशोक गहलोत के बेटे वैभव गहलोत ने अध्यक्ष पद से सोमवार को इस्तीफा दे दिया है। उनके खिलाफ अविश्वास प्रस्ताव लाने की तैयारी की जा रही थी। उन्होंने सोशल मीडिया पर जानकारी देते हुए लिखा कि साल 2019 में मैंने आरसीए के अध्यक्ष के तौर पर निर्वाचित होने के बाद काम करना शुरू किया। सभी जानते हैं कि 2017 में सीपी जोशी के आरसीए अध्यक्ष बनने से पहले पूर्ववर्ती भाजपा सरकार के कार्यकाल के दौरान आरसीए में कैसे हालात थे। राजस्थान में क्रिकेट की कैसी दुर्दशा थी। गहलोत ने कहा कि हम चाहते तो जब कांग्रेस की सरकार थी तब ही सरकार और आरसीए के बीच का एमओयू 15- 20 साल के लिए बढ़ा लेते, लेकिन हमने पूरे नियम कायदों का ध्यान रखा। पिछले दिनों एसएमएस स्टेडियम में आरसीए पर जो कार्रवाई हुई, उससे मुझे लगा कि ये बीजेपी

सरकार मुझे काम नहीं करने देगी, इसलिए मैंने अपने पद इस्तीफा दे दिया।

वैभव ने कहा- अभी-अभी मुझे जानकारी मिली है कि मेरे खिलाफ अविश्वास प्रस्ताव पेश कर दिया गया है। इस संबंध में मुझे इतना कहना है कि आरसीए के किसी भी पदाधिकारी या सदस्य ने मुझसे चर्चा नहीं की। ना ही किसी मुद्दे पर असहमति व्यक्त की अन्यथा मैं तो पहले ही अपना इस्तीफा दे चुका होता। मेरे लिए पद नहीं राज्य की क्रिकेट और खिलाड़ियों का भविष्य महत्वपूर्ण है। इस पर कभी आंच नहीं आने दूंगा। मैं भविष्य में राजस्थान की क्रिकेट, क्रिकेटरों, क्रिकेट प्रेमियों के हितों के लिए सदैव उपलब्ध रहूंगा। मेरा प्रयास रहा कि राजस्थान में क्रिकेट केवल जयपुर शहर तक ही सीमित ना रहे।इसलिए राजस्थान सरकार के साथ सामंजस्य कर जोधपुर में बरकतुल्लाह खान स्टेडियम के रिनोवेशन का काम करवाया। वहां आईपीए मैच कराए।

● **मंत्री खींवसर के बेटे के अध्यक्ष बनने की चर्चा**

» वैभव गहलोत के इस्तीफा देने के बाद ही अब आरसीए के नए अध्यक्ष को लेकर कवायद तेज हो गई है। नागौर जिला क्रिकेट एसोसिएशन के अध्यक्ष और कैबिनेट मंत्री गजेंद्र सिंह खींवसर के बेटे धनंजय सिंह आरसीए के नए अध्यक्ष बनने की दौड़ में सबसे आगे चल रहे हैं। नागौर जिला संघ के सचिव राजेंद्र सिंह के साथ बड़ी संख्या में दूसरे जिला संघों के सचिव भी धनंजय के समर्थन में हैं। ऐसे में माना जा रहा है कि अध्यक्ष पद के लिए अब धनंजय सिंह चुनावी मैदान में उतर सकते हैं। इधर, चूरू जिला संघ के अध्यक्ष पराक्रम सिंह भी अध्यक्ष बन सकते हैं। पराक्रम पूर्व मंत्री राजेंद्र राठौड़ के बेटे हैं।

मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा एवं भाजपा प्रदेश अध्यक्ष सीपी जोशी सांगानेर रेलवे स्टेशन से जुडे।

राजस्थान में रेलवे विकास की ऐतिहासिक सौगातों के लिए प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी का आभारः सीपी जोशी

चमकता राजस्थान

जयपुर। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने आज अमृत भारत स्टेशन योजना के अंतर्गत देश के 553 रेलवे स्टेशनों, गोमती नगर रेलवे स्टेशन का उद्घाटन, एवं 1500 रोड ओवर ब्रिज, अंडरपास का वर्चुअल शिलान्यास, उद्घाटन किया। भाजपा प्रदेश अध्यक्ष सीपी जोशी सांगानेर रेलवे स्टेशन के पुनर्विकास के शिलान्यास कार्यक्रम से इसमें जुडे जहां मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा, उप मुख्यमंत्री दिया कुमारी एवं डॉ. प्रेमचंद बैरवा भी उपस्थित रहे।

भाजपा प्रदेश अध्यक्ष सीपी जोशी ने कार्यक्रम को सम्बोधित करते हुए कहा कि देश और दुनिया के लोकप्रिय नेता प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में पिछले दस सालों के दौरान रेलवे में अभूतपूर्व परिवर्तन आया है। आज तो रेलवे विकास कार्यक्रम के विश्व

रिकॉर्ड का दिन है, देश में एक साथ 2000 स्थानों पर 41000 करोड़ के 554 रेलवे स्टेशनों के पुनर्विकास और 1500 रोड ओवर ब्रिज/अंडरपास का शिलान्यास/ उद्घाटन हुआ जिसमें राजस्थान के 21 रेलवे स्टेशन और 112 रोड ओवर ब्रिज/अंडरपास शामिल है। सीपी जोशी ने राजस्थान मे रेलवे विकास की ऐतिहासिक सौगातों के लिए प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी एवं रेल मंत्री अश्विनी वैष्णव का आभार जताया।

भाजपा प्रदेश अध्यक्ष सीपी जोशी ने कहा कि प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने रेलवे के क्षेत्र में देश और प्रदेश को जो सौगातें दी वो 60 सालों में कोई सरकार नहीं दे पाई। अमृत भारत स्टेशन योजना के अंतर्गत अनेक रेलवे स्टेशनों को आधुनिक और हाईटेक बनाया जा रहा है जहां एयरपोर्ट जैसी सुविधाएं उपलब्ध होगी। वंदे भारत ट्रेन की सौगात देशवासियों को मिली, देशभर में रेलवे लाइनों के विद्युतिकरण का काम हुआ। राजस्थान में 2014 से पहले मात्र 600 किलोमीटर का विद्युतिकरण था वहीं आज लगभग 3750 किलोमीटर का हो चुका है। 2013-14 के यूपीए शासन काल में राजस्थान को रेलवे में 650 करोड़ का बजट मिला था, मोदी सरकार 2.0 के 2022-23 के वर्ष में 9500 करोड़ का बजट मिला। वर्तमान में 60 हजार करोड़ के विकास कार्य राजस्थान में प्रगतिरत है। यह अंतर दिखाता है कि इच्छा शक्ति हो तो एक छोटे से कार्यकाल में क्या नहीं हो सकता। सपने नहीं हकीकत बुनते है, इसलिए लोग मोदी को चुनते है। यह नारा नहीं विश्वास है।

कार्यक्रम में जयपुर शहर सांसद रामचरण बोहरा, विधायक गोपाल शर्मा एवं कुलदीप धनकड़, जयपुर ग्रेटर मेयर डॉ. सौम्या गुर्जर, जयपुर शहर अध्यक्ष राघव शर्मा, सहित बडी संख्या में जनप्रतिनिधि, रेलवे विभाग के अधिकारी एवं कर्मचारी, भाजपा पदाधिकारी, कार्यकर्ता एवं आमजन की उपस्थिति रही।

● **प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने 554 रेलवे स्टेशनों के पुनर्विकास एवं 1500 रोड ओवर ब्रिज/अंडरपास का किया वर्चुअल शिलान्यास एवं उद्घाटन**

● **देश के रेलवे विकास कार्यक्रम में आज विश्व रिकॉर्ड का दिन, मोदी सरकार के कार्यकाल में हुआ अभूतपूर्व विकास : सीपी जोशी**

● **राजस्थान के 21 रेलवे स्टेशन और 112 रोड ओवर ब्रिज/अंडरपास शामिल, प्रदेश में 60 हजार करोड के कार्य प्रगतिरत - सीपी जोशी**

● **सपने नहीं हकीकत बुनते है इसलिए लोग मोदी को चुनते है, यह नारा नहीं विश्वास है : सीपी जोशी**

संदेशखाली प्रकरणः तुष्टीकरण की राजनीति का कुफल

पश्चिम बंगाल के उत्तर 24-परगना जिले में कालिंदी नदी के किनारे बसा गांव संदेशखाली पिछले कई दिनों से चर्चाओं में है। तृणमूल कांग्रेस के नेता शाहजहां शेख और उसके दो सहयोगियों पर यहां की महिलाओं ने कथित अत्याचार और यौन उत्पीड़न के कई गंभीर आरोप लगाए हैं। संदेशखाली की पीड़िताओं ने जो बातें जिम्मेदार लोगों को बताई हैं, वह 21 वीं सदी में अकल्पनीय है। ऐसे में अहम सवाल है कि कोई शाहजहां शेख कैसे इतना निरंकुश हो जाता है? शाहजहां जैसे अत्याचारियों को ताकत कहां से मिलती है? इन सवालों का जवाब भाजपा प्रवक्ता एवं सांसद सुधांशु त्रिवेदी के बयान के छिपा है। सुधांशु के अनुसार, 'जो कुछ संदेशखाली में हो रहा है वो मात्र एक घटना नहीं बल्कि एक राजनीति सोच है, जो 78 वर्ष पूर्व नोआखाली से लेकर आज के संदेशखाली तक बंगाल के लिए नासूर बनती जा रही है। शाहजहां शेख एक व्यक्ति नहीं एक प्रवृत्ति है जिसे मात्र बंगाल में नहीं बल्कि पूरे भारत में एक विशेष प्रकार का सेक्युलर संरक्षण प्राप्त है।'

राजनीतिक इतिहास के पन्ने पलटें तो पता चलता है कि कांग्रेस पार्टी को मुस्लिम तुष्टीकरण की जननी कहा जाए तो अतिशयोक्ति नहीं होगी। आजादी के बाद नेहरू से वर्तमान तक पार्टी तुष्टिकरण की राजनीति को समर्पित रही है। आजादी के बाद घरेलू ही नहीं, विदेशी नीति भी तुष्टिकरण से तय होती थी। सबसे बड़ी विडंबना यह रही कि जिन मुसलमानों के नाम पर कांग्रेस ने देश में तुष्टीकरण की नीति का आगाज किया उन मुसलमानों की माली हालत सुधरने की बजाय बिगड़ती चली गई। दूसरी विडंबना यह हुई कि कांग्रेसी तुष्टिकरण का संक्रमण क्षेत्रीय पार्टियों, मीडिया, बुद्धिजीवियों तक होता गया। पश्चिम बंगाल में तृणमूल कांग्रेस की सरकार मुस्लिम तुष्टिकरण के बलबूते ही सत्ता में आई थी। सत्ता पर काबिज होने के बाद से तृणमूल की सरकार ने मुस्लिम तुष्टीकरण के लिए हिंदुओं व दूसरे समुदायों की पूरी तरह अनदेखी की। हिन्दुओं के धार्मिक उत्सवों और यात्राओं तक में सरकार ने अड़चन लगाने का काम किया। पश्चिम बंगाल में हिन्दुओं की जो दुर्दशा हो रही है, वो किसी छिपी नहीं है। तृणमूल के नेता और कार्यकर्ता जिस तरह का अत्याचार कर रहे हैं, वो सुनकर हैरानी होती है कि हम किसी लोकतांत्रिक व्यवस्था में रहते हैं और पश्चिम बंगाल में लोकतांत्रिक तरीके से चुनी हुई सरकार है। पश्चिम बंगाल हो या फिर दिल्ली, मुस्लिम तुष्टिकरण को लेकर इनमें होड़ है। दिल्ली के दंगों में आम आदमी पार्टी के नेताओं की भूमिका सर्वविदित है।

दिल्ली में शाहीन बाग प्रदर्शन के पीछे भी मुस्लिम तुष्टीकरण वाली राजनीतिक ताकतें अपना चेहरा चाहकर भी छुपा नहीं पाई थीं। तेलंगाना में जब बीआरएस और राजस्थान और छत्तीसगढ़ में कांग्रेस की सरकार थी, तब वहां मुस्लिम तुष्टिकरण ही राज्यनीति था। बिहार में राष्ट्रीय जनता दल जब सरकार की हिस्सेदार थी, तब वहां भी मुस्लिम तुष्टीकरण चरम पर था। आजादी के बाद देश में जिस मुस्लिम तुष्टीकरण की नीति को जो बीज बोया गया, वह आगे चलकर वटवृक्ष बन गया। भारत दुनिया का इकलौता देश बना जहां बहुसंख्यकों के हितों की कीमत पर अल्पसंख्यकों को वरीयता दी गई। कांग्रेसी तुष्टीकरण का पहला नमूना आजादी के तुरंत बाद देखने को मिला जब देश के पहले राष्ट्रपति डॉ. राजेंद्र प्रसाद ने गुलामी के पहले कलंक को मिटाने के लिए भव्य सोमनाथ मंदिर बनाने की पहल की। लेकिन मुस्लिम परस्ती के चलते प्रधानमंत्री जवाहर लाल नेहरू ने न सिर्फ सोमनाथ मंदिर के नवीनीकरण और पुनर्स्थापना के कार्य से खुद को अलग कर लिया बल्कि तत्कालीन सौराष्ट्र के मुख्यमंत्री को आदेश दिया कि मंदिर निर्माण में सरकार का एक भी पैसा नहीं लगना चाहिए।

इतना ही नहीं, जब राष्ट्रपति डॉ. राजेंद्र प्रसाद पुनर्निर्मित सोमनाथ मंदिर का उद्घाटन करने जाने लगे तब नेहरू ने उन्हें रोकने की नाकाम कोशिश भी की। वास्तव में, अल्पसंख्यकवाद और मुस्लिम तुष्टिकरण ही भारत के छद्म धर्म (पंथ) निरपेक्षतावाद की मूल धुरी है। इस देश के मुसलमानों का खुश रहना नहीं, उन्हें खुश रखने के लिए हरसंभव प्रयत्न का नाम है सेक्युलिरिटी। जैसे गरीबी हटाने का नारा जीवित रखने के लिए गरीब बनाकर रखना एक राजनीतिक आवश्यकता है, ठीक उसी प्रकार से इस देश के मुसलमानों को अपनी पूजा पद्धति रोजा-नमाज और मस्जिद सहित यहां की मुख्य सांस्कृतिक और राष्ट्रीय धारा न बनने देकर उसके समानांतर एक मुस्लिम मजहबी धारा बनाकर रखना भी वोट राजनीति की जरूरत है।

वोट राजनीति की इस विवशता को कतिपय राजनीतिक दल, दल विहीन राजनेता और बुद्धिवादी देश का स्थायी भाव बना देने की जी तोड़ कोशिशें कर रहे हैं। स्वभावतरू पंथनिरपेक्ष भर को सुनियोजित ढंग से पंथ और मजहब के संदर्भ में सोचने, जीने और अपना मानस बनाने को कहा जा रहा है कि यदि ऐसा सोचा और किया न गया तो देश साम्प्रदायिकता की आग में जलकर राख बन जायेगा। यदि संक्षेप में और कुछ वाक्यों में कहें तो आज के भारत की धर्म (पंथ) निरपेक्षता मुस्लिम सापेक्षता का पर्याय है। दोनों एक दूसरे के दास हैं। दोनों की आधार भूमि है सत्ता राजनीति। यह मान लिया गया है कि मुस्लिम सापेक्ष न होना पंथनिरपेक्षता का विरोधी होना है। यह कि यदि हमारी सोच का केंद्र बिंदु मुसलमान नहीं हैं तो हम भारत राष्ट्र को तोड़ने की दिशा में बढ़ रहे हैं। और यह कि यदि हम अपने आचार विचार से हिन्दू विरोधी नहीं हैं तो हम सेकुलर नहीं हैं। अतएव यदि हमें सेकुलर बने रहना है तो हमें चाहिए कि हम कश्मीर घाटी से भगा दिये गये हिन्दुओं की पीड़ा प्रताड़ना, उनके दुख और दैन्य की बात न करें। कन्हैयालाल की हत्या और संदेशखाली पर मुंह बंद रखें। यानी हिन्दुओं पर होने वाले अत्याचारों जिसमें सरकारें और राजनीति दल शामिल हैं, उन्हें अनदेखा करें।

कांग्रेस की तुष्टीकरण की नीति का असर दूसरी राजनीतिक पार्टियों पर भी पड़ा और वे मुस्लिम वोट बैंक छिटकने के डर से हिंदुओं के हित में बोलने से कन्नी काटने लगीं। लालू प्रसाद यादव, मुलायम सिंह यादव, अखिलेश यादव, तेजस्वी यादव, ममता बनर्जी, एन चंद्रबाबू नायडू, अरविंद केजरीवाल, चंद्रशेखर राव जैसे नेताओं की मुस्लिमपरस्ती एक दिन में नहीं आई है। यह सब कांग्रेसी तुष्टिकरण रूपी वटवृक्ष के फल हैं। दरअसल कांग्रेस द्वारा क्षेत्रीय अस्मिताओं की उपेक्षा और तानाशाही से उपजी क्षेत्रीय पार्टियों ने मुस्लिम वोट हासिल करने के लिए मुसलमानों के सशक्तिकरण की बजाय तुष्टीकरण का कांग्रेसी फार्मूला अपना लिया। इसका नतीजा यह हुआ कि एक ओर मुसलमानों का पिछड़ापन बढ़ा तो दूसरी ओर कट्टरपंथ को उर्वर जमीन मिली। 'तुष्टीकरण' की राजनीति ने मुख्य रूप से मुस्लिमों के बीच की 'मलाईदार परत' को ही फायदा पहुंचाया। इससे कथित धर्मनिरपेक्ष राजनीति का खोखलापन उजागर होता है।

कांग्रेस का इतिहास खुद इस बात का गवाह है कि उसने अपनी पूरी राजनीति तुष्टीकरण को आधार बनाकर ही की है अल्पसंख्यकों में भी उसने सबसे अधिक मुस्लिम वोटों पर अपना ध्यान केंद्रित किया है, क्योंकि मुस्लिम वोट देश के कई हिस्सों में निर्णायक साबित होते हैं। कांग्रेस के वरिष्ठ नेता पूर्व प्रधानमंत्री मनमोहन सिंह ने कहा था कि देश के बजट पर पहला हक मुसलमानों का बनता है। कर्नाटक चुनाव में कांग्रेस और पश्चिम बंगाल में तृणमूल कांग्रेस की जीत की बड़ी वजह मुसलमानों का थोक वोट मिलना था। पिछले साल मुस्लिम वोटों की बदौलत कांग्रेस तेलंगाना में सत्ता हासिल करने में सफल रही। राजनीतिक दल वोट बैंक के लिए तुष्टिकरण का सहारा लेते आए हैं। राजनीतिक दलों ने अपने एजेंडे के हिसाब से धर्म व संप्रदाय बांट रखे हैं और उसके तुष्टिकरण में वो किसी भी हद तक चले जाते हैं। सच्चाई यह है कि तुष्टिकरण देश के विकास, सद्भाव, भाईचारे, सुरक्षा और शांति के लिए हानिकारक है। मौकापरस्त, स्वार्थी और गलत प्रवृत्ति के व्यक्ति तुष्टिकरण की आड़ में पाशविकता करते हैं जो शाहजहां शेख और उसके गुर्गों ने संदेशखाली में किया। सही मायने में संदेशखाली में जो कुछ हुआ वो राजनीतिक तुष्टिकरण का कुफल है। राजनीतिक दलों को तुष्टिकरण की राजनीति से बाज आना चाहिए, इसी में सबकी भलाई है।

क्या इंडिया गठबंधन भाजपा के लिए चुनौती बनेगा?

ललित गर्ग

अंधेरों एवं निराशा के गर्त में जा चुके एवं लगभग बिखर चुके इंडिया गठबंधन के लिए कुछ अच्छी खबरों ने जहां उसमें नये उत्साह का संचार किया है वहीं भारतीय जनता पार्टी के लिये चिन्ता के कारण उत्पन्न किये हैं। पहले उत्तर प्रदेश और फिर दिल्ली में समाजवादी पार्टी और आम आदमी पार्टी से सीट बंटवारे पर बनी सहमति ने टूट की कगार पर पहुंचे इंडिया गठबंधन में वर्ष 2024 के आम चुनावों को लेकर संभावनाभरी तस्वीर को प्रस्तुत किया है। अब ये चुनाव दिलचस्प होने के साथ कुछ सीटों पर कांटे की टक्कर वाले होंगे। इन नये बन रहे चुनावी समीकरणों के बावजूद भाजपा के लिये अभी कोई बड़ा संकट नहीं दिख रहा है। भले ही इंडिया गठबंधन ढ़ींगे हांके कि वह भाजपा एवं उसके गठबंधन के लिए कड़ी चुनौती पेश करने की स्थिति आ गयी है। भाजपा के खिलाफ विपक्षी दलों का जब गठबंधन बना तभी यह आशंका की गयी कि यह कितनी दूर चल पायेगा, टिक पायेगा भी या नहीं? कुछ हालात तो ऐसे भी बने कि इसके तार-तार होने की संभावनाएं बलवती हुई। भले ही अब कुछ सीटों पर दलों के बीच सहमति बनी हो लेकिन अभी कई महीने निकल जाने के बाद भी विधिवत रूप से इंडिया गठबंधन के संयोजक का नाम घोषित नहीं हो पाना अनेक सन्देहों एवं अटकलों का कारण बना हुआ है।

सत्ता तक पहुंचने के लिए जिस प्रकार दल-टूटन व गठबंधन हो रहे हैं इससे सबके मन में अकल्पनीय सम्भावनाओं की सिहरन उठती है। राष्ट्र और राष्ट्रीयता के अस्तित्व पर ही प्रश्नचिन्ह लगने लगा है। कुछ अनहोनी होगी, ऐसा सब महसूस कर रहे हैं। प्रजातंत्र में टकराव होता है। विचार फर्क भी होता है। मन-मुटाव भी होता है पर मर्यादापूर्वक। लेकिन अब इस आधार को ताक पर रख दिया गया है। राजनीति में दुश्मन स्थाई नहीं होते। अवसरवादिता दुश्मन को दोस्त और दोस्त को दुश्मन बना देती है। यह भी बड़े रूप में देखने को मिल रहा है। राजनीति नफा-नुकसान का खेल बन रहा है, मूल्य बिखर रहे हैं। चारों ओर सत्ता की भूख बिखरी है। पिछले कुछ समय से इंडिया गठबंधन को एक के बाद एक कई झटके लगे। पहले तो कांग्रेस ने ही पिछले साल दिसंबर के विधानसभा चुनावों में अच्छे प्रदर्शन की उम्मीद में गठबंधन से जुड़ी बातचीत को ठंडे बस्ते में डाले रखा। बातचीत शुरू भी हुई तो नेताओं में न तो पहले जैसा जोश दिखा और न वैसी राजनीतिक जिजीविषा महसूस हुई। फिर गठबंधन के प्रस्ताव पर सबसे बढ़-चढ़कर काम करने वाले

नीतीश कुमार ही उसे छोड़ गए। यूपी में रालोद के जयंत चौधरी भी इंडिया गठबंधन का हाथ थामते-थामते एनडीए में शामिल हो गए। इंडिया गठबंधन एवं कांग्रेस ने अनेक झटके झेले। छोटे-बड़े नेताओं के कांग्रेस छोड़ने का सिलसिला भी तेज हुआ। महाराष्ट्र के पूर्व मुख्यमंत्री अशोक चव्हाण का नाम खास तौर पर चर्चित रहा। इसे चाहे इन नेताओं का व्यक्तिगत अवसरवाद कहें या भाजपा और एनडीए नेतृत्व की सक्रियता एवं राजनीतिक कौशल इतना तय है कि इन नेताओं को कांग्रेस का भविष्य खास अच्छा नहीं दिख रहा। आम आदमी पार्टी एवं समाजवादी पार्टी जैसे दल अपनी साख बचाने एवं सत्ता के करीब बने रहने के लिये सीटों के बंटवारे पर सहमत हुए है, उसमें कांग्रेस का घूटने टेकना भी उसकी टूटती सांसों को बचाने की जद्दोजहद ही कहीं जायेगी। कांग्रेस एवं अन्य दलों के बीच सहमति के स्वर उभरने से आगामी लोकसभा चुनाव में अच्छा मुकाबला दिख सकता है। लेकिन अहम सवाल तो यही है कि क्या गठबंधन की गाड़ी आगे और हिचकोले नहीं खाएगी? क्या यह दावा पूरी दृढ़ता से किया जा सकता है?

अरविन्द केजरीवाल ने कांग्रेस से सीटों पर सहमति बनाकर पलटूराम ही बने हैं। जी-भरकर एक-दूसरे को कोसने वाले जब हाथ मिलाए तो आश्चर्य होना स्वाभाविक है। देखा जाये तो कांग्रेस और आम आदमी पार्टी के बीच चुनावी गठबंधन होना मूल्यहीनता एवं सिद्धान्तहीनता की चरम पराकाष्ठा है क्योंकि कांग्रेस की नीतियों के खिलाफ लड़ कर और आंदोलन खड़ा करके ही आम आदमी पार्टी का जन्म हुआ था। आम आदमी पार्टी ने दिल्ली और पंजाब की सत्ता से कांग्रेस को बाहर किया और अपनी स्पष्ट बहुमत की सरकार बनाई। आम आदमी पार्टी के चमत्कारिक प्रदर्शन के चलते ही गुजरात में कांग्रेस ने अब तक का सबसे निराशाजनक प्रदर्शन किया। आम आदमी पार्टी ने गोवा में भी कांग्रेस को काफी नुकसान पहुँचाया और हरियाणा में भी अपने संगठन का आधार बढ़ाया। ताजा कांग्रेस एवं आम आदमी पार्टी की सहमति से कांग्रेस को ही नुकसान होना है। केजरीवाल की बजाय ममता बनर्जी ने अलग छाप छोड़ी है। उसने बंगाल में कांग्रेस के लिए उनकी मौजूदा दो लोकसभा सीटों को ही छोड़ने की बात कह कर कांग्रेस के अधिक सीटों पर दावा करने के कारण स्वतंत्र चुनाव लड़ने की घोषणा कर गठबंधन को धराशायी किया। ममता बनर्जी पश्चिम बंगाल ही नहीं, बल्कि त्रिपुरा, असम और गोवा में भी स्वतंत्र चुनाव लड़ने की बात कह रही हैं, जिससे कांग्रेस को लोकसभा चुनाव में निराशा ही हाथ लगेगी।

इंडिया गठबंधन के नये बन रहे सकारात्मक परिदृश्यों के बावजूद प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की राजनीतिक सेहत पर कोई असर न झलकना उनकी राजनीतिक परिपक्वता की परिचायक है। 2024 के चुनावों में भाजपा के लिए 370 और एनडीए के लिए 400 सीटों का लक्ष्य तय करने के मोदी के लक्ष्य के सामने अभी भी कोई बड़ी चुनौती दिख नहीं रही है। इन बड़े लक्ष्यों को हासिल करने के लिए भाजपा एवं मोदी अपनी सीटें कहां से बढ़ा सकेंगे, इसके लिये भाजपा दोतरफा रणनीति पर काम कर रही है। पहली है, दक्षिणी राज्यों में पैठ बनाना। यह स्वाभाविक भी है क्योंकि भाजपा पहले ही उत्तर-पश्चिम के कई राज्यों में चरम पर पहुंच चुकी है। दूसरी रणनीति है पुराने सहयोगियों को एनडीए में वापस लाने और नए सहयोगियों को जोड़ने की, जिसमें वह अब तक काफी हद तक सफल भी रही है। जदयू एनडीए के साथ फिर से आ गई है, रालोद भी एनडीए में लौट आई है, पंजाब में अकाली दल को वापस लाने के प्रयास जारी हैं और तेदेपा के साथ बातचीत अंतिम चरण में है। कुछ और पार्टियां एनडीए में शामिल हो सकती हैं। लेकिन एनडीए के विस्तार भर से भाजपा को 2024 में 370 सीटें नहीं मिलने वालीं। अभी उसे काफी जोड़-तोड़ करने होंगे। गौरतलब है कि अमित शाह ने तमिलनाडु की कमान संभाल ली है और पार्टी की राज्य इकाई के प्रमुख के. अन्नामलै को काम करने की खुली छूट दे दी है। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने भी तमिलनाडु का दौरा किया है, जिसे दक्षिण में भाजपा के चुनावी अभियान की शुरुआत के रूप में देखा जा रहा है। केन्द्रीय मंत्रियों को बड़ी जिम्मेदारी के साथ सक्रिय किया गया है। भाजपा दक्षिण के राज्यों में अपना प्रभाव बढ़ाने के लिए कड़ी मेहनत कर रही है। राम मंदिर का उत्साह निश्चित रूप से उत्तर भारतीय हिंदी पट्टी के राज्यों में अधिक है, लेकिन दक्षिण भी भाजपा को कुछ चुनावी लाभ दे सकता है। याद रहे कि भाजपा ने पहले ही दक्षिण भारतीय राज्यों के लिए मतदाता-पहुंच कार्यक्रम शुरू कर दिया है। तेलंगाना और केरल आदि दक्षिण के राज्यों पर भाजपा विशेष बल दे रहा है, वहां भी इस बार अच्छा प्रदर्शन होने की संभावना है। भाजपा के राजनीतिक समीकरणों एवं रणनीतियों के चलते स्वतंत्र भारत का सबसे दिलचस्प चुनाव में अपने तय लक्ष्यों के अनुरूप ऐतिहासिक जीत को हासिल कर लें तो कोई आश्चर्य नहीं है।

अर्थशास्त्र की शैली में योगी की सराहना

डॉ दिलीप अग्निहोत्री

पहले रक्षा मंत्री और वर्तमान में वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण उत्तर प्रदेश के विकास में रुचि लेती रही हैं। यहां योगी आदित्यनाथ सरकार बनने के बाद केंद्र की योजनाओं पर तेजी से कार्य शुरू किया गया। इसके सकारात्मक परिणाम भी मिलने लगे हैं। नरेंद्र मोदी की पिछली सरकार में निर्मला सीतारमण रक्षा मंत्री थीं। उस समय भी उन्होंने लखनऊ में डिफेंस कॉरिडोर निर्माण कार्यो की मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ के साथ समीक्षा की थी। उस समय भी उन्होंने योगी आदित्यनाथ के कार्यो की सराहना की थी। निर्मला सीतारमण ने अर्थशास्त्र की शैली में योगी आदित्यनाथ को डायनामिक बताया। केन्द्रीय वित्त मंत्री ने कहा कि पूर्वी उत्तर प्रदेश में जितने भी प्रोजेक्ट शुरू हुए हैं, उनमें प्रधानमंत्री के साथ ही, प्रदेश के डायनमिक मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ का भी योगदान है। उत्तर प्रदेश में पचहत्तर जनपद हैं। एक वर्ष में बावन सप्ताह होते हैं। मुख्यमंत्री एक वर्ष में हर जनपद में कम से कम एक बार और कई जनपदों में दो बार भी जाते हैं। सभी पचहत्तर जनपदों में कम से कम एक बार जाने वाले मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ हैं। वह प्रदेश के सभी जनपदों में यात्रा कर विकास कार्यो की निगरानी करते हैं, इसलिए ये एक गतिशील डायनमिक मुख्यमंत्री है। लखनऊ में इनका अप्वाइंटमेण्ट मिलना मुश्किल है। मुख्यमंत्री प्रत्येक जनपद को मुख्यालय मानकर डायनमिक तरीके से निरन्तर गतिशील रहते हुए उत्तर प्रदेश जैसे बड़े राज्य का शासन चला रहे हैं। कुछ समय पहले निर्मला सीतारमन लखनऊ यात्रा पर आई थीं। यहां वह सामाजिक व आर्थिक कार्यक्रम में सहभागी हुई। यहां भी उन्होंने योगी आदित्यनाथ के विजन को प्रशंसनीय बताया था। योगी आदित्यनाथ ने महिला सशक्तिकरण को आर्थिक स्वालंबन से जोड़ा है। मिशन शक्ति में महिलाओं के स्वावलंबन को भी जोड़ा गया है। इसके अलावा उन्होंने सभी एक्सप्रेस वे के निकट औद्योगिक क्षेत्र विकसित करा रहे है। एक्सप्रेस वे निर्माण के संबन्ध में योगी आदित्यनाथ ने नजरिया ही बदल दिया है। अब एक्सप्रेस वे यातायात का माध्यम मात्र नहीं है। बल्कि योगी ने इसे औद्योगिक विकास से जोड़ कर अभिनव कार्य किया है। विकास के जिन क्षेत्रों में योगी सरकार ने कीर्तिमान स्थापित किये हैं, उसमें कनेक्टिविटी भी शामिल है। नीति आयोग के माध्यम से राज्यों के बीच विकास की स्वस्थ प्रतिद्वंदिता प्रारंभ करने की कल्पना की गई थी। योगी ने इसे चरितार्थ किया। उन्हीं की तरह अनेक मुख्यमंत्री भी इस दिशा में बेहतर कार्य करने में सफल रहे। वहीं जिनको विकास की अपेक्षा वोटबैंक की सियासत ज्यादा पसंद थी, वह उसी में उलझे रहे। नीति आयोग की स्थापना विकास और सहयोगी संघवाद को प्रोत्साहन देने के उद्देश्य से की गई था। इसमें संदेह नहीं कि उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने इस लक्ष्य को बेहतर ढंग से समझा है। यही कारण है कि विकास के कई बिंदुओं पर उत्तर प्रदेश को शीर्ष पर पहुंचाने में सफल रहे हैं। देखा जाए तो नीति आयोग की अवधारणा पर योगी ने न केवल अमल किया बल्कि उसमें अपना सक्रिय योगदान भी दिया है। उन्होंने उत्तर प्रदेश के विकास को सर्वाधिक महत्व दिया। नीति आयोग के गठन के समय इसी प्रकार की अपेक्षा की गई थी। नीति आयोग के माध्यम से राज्यों के बीच विकास की स्वस्थ प्रतिद्वंदिता प्रारंभ करने की कल्पना की गई थी। योगी ने इसे चरितार्थ किया। उन्हीं की तरह अनेक मुख्यमंत्री भी इस दिशा में बेहतर कार्य करने में सफल रहे। वहीं जिनको विकास की अपेक्षा वोटबैंक की सियासत ज्यादा पसंद थी, वह उसी में उलझे रहे। सबसे तेजी से उभरने वाली अर्थव्यवस्था वाले राज्यों में होगा। डिफेंस कॉरिडोर में कोरिया, इजराइल, रूस, फ्रांस, जर्मनी ने रुचि दिखाई। इसका क्षेत्र झांसी, चित्रकूट, कानपुर आगरा, अलीगढ़ और लखनऊ होगा। लखनऊ में डिफेंस एक्सपो आयोजित किया गया। वेब पोर्टल के रूप में निवेश मित्र की स्थापना की गई है। पूरी प्रक्रिया ऑनलाइन होने से निवेशकों को सुविधा हुई है। पहली बार अप्रवासी भारतीय सम्मेलन काशी में हुआ था। इसमें सत्तर से अधिक देशो के सात हजार प्रतिनिधि शामिल हुए। सरकार बनने के चौबीस घंटे में अवैध बूचड़खाने बंद किये गए। इन्फ्रास्ट्रक्चर और इंटर स्टेट कनेक्टिविटी को मजबूत बनाया जा रहा है। एक्सप्रेस वे बन रहे हैं। पहला जल मार्ग वाराणसी में शुरु हुआ है। पूर्व और पश्चिम फ्रंट कॉरिडोर प्रदेश से गुजर रहे हैं। इनका जंक्शन दादरी में है। इंफ्रास्ट्रक्चर और इंडस्ट्री में बड़ा निवेश हो रहा है।

योगी ने कहा कि जब उन्होंने पद संभाला था, तब अर्थव्यवस्था, विकास, कानून व्यवस्था की दशा खराब थी। अराजकता भ्रष्टाचार और असुरक्षा का माहौल था। शिक्षा व्यवस्था बदहाल थी। इन समस्याओं का निराकरण किया गया। एक जनपद, एक उत्पाद योजना लागू की गई। यह सफल रही है। प्रयागराज कुम्भ में तीर्थयात्रियों की संख्या, सुरक्षा, स्वच्छता और सुव्यवस्था के नए रिकार्ड बने। अयोध्या में दीपोत्सव और मथुरा में रंगोत्सव से आध्यात्मिक, सांस्कृतिक परंपरा के साथ ही पर्यटन को बढ़ावा देने की शुरुआत की गई। पहले सरकारें कुछ खास क्षेत्रों पर ध्यान देती थीं, जबकि वर्तमान सरकार बिना भेदभाव के पूरे प्रदेश को योजनाओं से लाभान्वित कर रही है। उत्तर प्रदेश डिफेंस इण्डस्ट्रियल कॉरिडोर के माध्यम से प्रदेश में निवेश एवं रोजगार के अवसरों में वृद्धि हुई है। इस डिफेंस इण्डस्ट्रियल कॉरिडोर में छह नोड्स विकसित किए जा रहे हैं। प्रदेश सरकार ने बुन्देलखण्ड क्षेत्र में पेयजल की समस्या के निदान के लिए हर घर नल योजना प्रारम्भ की है। बुन्देलखण्ड क्षेत्र की सभी ग्राम पंचायतों में हर घर नल योजना के कार्य को युद्धस्तर पर क्रियान्वित करने के लिए काम जारी है।

पहली बार अप्रवासी भारतीय सम्मेलन काशी में हुआ। इसमें सत्तर से अधिक देशो के सात हजार प्रतिनिधि शामिल हुए। सरकार बनने के चौबीस घंटे में अवैध बूचड़खाने बंद किये गए इन्फ्रास्ट्रक्चर और इंटर स्टेट कनेक्टिविटी को मजबूत बनाया जा रहा है। एक्सप्रेस वे बन रहे हैं। पहला जल मार्ग वाराणसी में शुरु हुआ है। पूर्व और पश्चिम फ्रंट कॉरिडोर प्रदेश से गुजर रहे हैं। इनका जंक्शन दादरी में है। इंफ्रास्ट्रक्चर और इंडस्ट्री में बड़ा निवेश हो रहा है।

जिला मुख्यालयों को फोर लेन मार्ग से जोड़ा गया है। तहसील एवं ब्लॉक मुख्यालय को फोर तथा टू-लेन मार्ग से जोड़ा जा रहा है। पश्चिमी उत्तर प्रदेश के मेरठ को प्रयागराज से जोड़ने के लिए पांच सौ पनचाबे किलोमीटर लम्बाई के देश के दूसरे सबसे बड़े एक्सप्रेस-वे के रूप में गंगा एक्सप्रेस-वे का निर्माण कराया जा रहा है।

निर्मला सीतारमण ने कहा कि मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ द्वारा केन्द्र सरकार के कार्यक्रमों, नीतियों एवं वित्तीय प्रावधानों को राज्य में तेजी से क्रियान्वित किया जाता है। गंगा एक्सप्रेस-वे के किनारों पर औद्योगिक क्लस्टर विकसित किए जाने की परियोजना की सराहना करते हुए कहा कि इस तरह की परियोजनाओं के विकास के लिए राजनीतिक नेतृत्व की प्रतिबद्धता जरूरी होती है, जो मुख्यमंत्री में है। उन्होंने कहा कि राज्य में गंगा एक्सप्रेस-वे सहित विभिन्न एक्सप्रेस-वे का निर्माण प्रधानमंत्री के वोकल फॉर लोकल के मंत्र के साथ ही, प्रदेश सरकार की 'एक जनपद एक उत्पाद' योजना को प्रभावी ढंग से आगे बढ़ाने में सहायक हैं।

परीक्षाओं का मौसम है, पढ़ने के साथ खेलकूद भी जरूरी

योगेश कुमार गोयल

दसवीं तथा 12वीं कक्षा की बोर्ड की वार्षिक परीक्षाएं शुरू हो चुकी हैं। यही वह समय होता है, जब विद्यार्थियों की सालभर की पढ़ाई का मूल्यांकन होना होता है। इसी परीक्षा की बदौलत उन्हें आगे की पढ़ाई के लिए आधार मिलता है। इसलिए बहुत जरूरी है कि एकाग्रचित्त होकर इन परीक्षाओं की तैयारी की जाए। कुछ छात्र परीक्षा की तैयारी के लिए अपना कोई लक्ष्य निर्धारित नहीं कर पाते और लक्ष्य निर्धारित नहीं होने के कारण एकाग्रचित्त होकर परीक्षा की तैयारी नहीं कर पाते। ऐसे में परीक्षा को लेकर उनका चिंतित और तनावग्रस्त होना स्वाभाविक ही है। किन्तु परीक्षा के दिनों में जरूरत से ज्यादा तनावग्रस्त रहना निश्चित रूप से हानिकारक साबित होता है। तनावग्रस्त रहने के कारण लाख कोशिश के बाद भी पढ़ाई में मन नहीं लग सकता। अतः यह अत्यंत आवश्यक है कि वे शुरू से ही पढ़ाई के प्रति रुचि बनाए रखें। अपना लक्ष्य निर्धारित करें, ताकि ऐसी परिस्थितियां ही उत्पन्न न होने पाएं, जिनके कारण परीक्षा को हौवा मानकर उन्हें तनावग्रस्त रहना पड़े। कुछ छात्र वार्षिक परीक्षाओं की तैयारी में रात-दिन इस कदर जुट जाते हैं कि उन्हें अपने खाने-पीने की भी सुध नहीं रहती। कुछ मामलों में तो स्थिति यह हो जाती है कि खानपान के मामले में निरंतर लापरवाही बरतने के कारण छात्रों का स्वास्थ्य गिरता जाता है, जिसका सीधा-सीधा प्रभाव उनकी स्मरण शक्ति पर पड़ता है और नतीजा, परीक्षा की भरपूर तैयारी के बावजूद उन्हें आशातीत सफलता नहीं मिल पाती। एक छात्र के साथ भी पिछले साल 12वीं की परीक्षा में यही हुआ। वह अपनी कक्षा का होनहार छात्र था और जी-जान से परीक्षा की तैयारी में जुटा था। पढ़ाई में वह इस कदर मग्न था कि उसे अपने खाने-पीने का भी ध्यान न रहता। परिणामस्वरूप उसका स्वास्थ्य गिरता गया और परीक्षा के दिनों में वह बीमार पड़ गया। बीमारी की हालत में ही उसे परीक्षा देनी पड़ी। जब वह परीक्षा देने बैठा, तब शारीरिक और मानसिक अस्वस्थता की दशा में वह याद किए गए प्रश्नों के उत्तर भी भूल गया। इसका परिणाम यह रहा कि वह कामचलाऊ अंकों से ही परीक्षा उत्तीर्ण कर सका।

कहने का तात्पर्य यही है कि परीक्षा के दिनों में खूब मन लगाकर पढ़ाई करना और कड़ी मेहनत करना तो जरूरी है ही लेकिन पढ़ाई के साथ-साथ अपने स्वास्थ्य का ध्यान रखना भी बेहद जरूरी है क्योंकि यदि आपका शरीर ही स्वस्थ नहीं होगा तो आप परीक्षा की तैयारी बेहतर ढंग से मन लगाकर कैसे कर पाएंगे? परीक्षा में सफलता-विफलता को लेकर भी बहुत से छात्र परीक्षाओं के शुरू होने से पहले ही तनावग्रस्त हो जाते हैं और उनके मन में परीक्षा नजदीक आते ही बेचैनी सी छा जाती है। दरअसल कुछ छात्र ऐसे होते हैं, जो पूरे साल का समय तो मौजमस्ती में ही गुजार देते हैं और जब परीक्षाएं नजदीक आती हैं तो परीक्षाओं को हौवा मानकर घबराने लगते हैं। समय सारिणी बनाकर नियमित अध्ययन न करना भी छात्रों के तनावग्रस्त होने का प्रमुख कारण होता है। वैसे प्रायः वही छात्र परीक्षाओं को हौवा मानते हैं, जो सालभर तो मौजमस्ती करते घूमते फिरते हैं और परीक्षाओं के ऐन मौके पर उन्हें किताबों की सुध आती है। तब उन्हें समझ ही नहीं आता कि परीक्षा की तैयारी कैसे और कहां से शुरू की जाए। इसी हड़बड़ी तथा तनाव के चलते अकसर वे परीक्षा में पिछड़ जाते हैं। यदि किसी छात्र ने सालभर नियमित रूप से मन लगाकर पढ़ाई की है तो कोई कारण नहीं, जो परीक्षा से उसे किसी प्रकार का भय सताए।

यदि आप समय सारणी बनाकर अध्ययन-मनन करें तो कठिन से कठिन हर विषय भी आपको आसानी से समझ में आ सकता है। समय सारिणी बनाते समय इसमें केवल अपने मनपसंद विषय को ही वरीयता न दें बल्कि सभी विषयों पर बराबर ध्यान देने का प्रयास करें बल्कि जिस विषय में आप स्वयं को कमजोर पाते हैं, उस पर कुछ ज्यादा ध्यान केन्द्रित करने का प्रयास करें। जो भी कुछ पढ़ें या याद करें, उस पर पूरा ध्यान केन्द्रित करते हुए उसे दोहराते रहें ताकि वह लंबे समय तक याद रह सके। प्रत्येक विषय के संक्षिप्त नोट्स अवश्य बनाएं, जिससे परीक्षा की तैयारी में बहुत मदद मिलेगी। जो विषय अथवा प्रश्न समझ नहीं आ रहा हो, वह अपने शिक्षक अथवा मित्र से पूछने में संकोच न करें। परीक्षा के दिनों में भी पर्याप्त नींद लें। रात-रात भर जागकर पढ़ना स्वास्थ्य के लिए अच्छा नहीं। जिस दिन आपको परीक्षा देनी है, उस रात भरपूर नींद लें वरना कहीं ऐसा न हो कि परीक्षा देते समय आपको आलस्य सताने लगे और आप चाहकर भी सही ढंग से परीक्षा न दे पाएं। अपनी लिखावट साफ-सुथरी और लिखने की गति तेज बनाएं ताकि प्रश्नपत्र हल करते समय आपको समय की कमी का रोना न रोना पड़े।

घर का वातावरण तथा अभिभावकों की सजगता भी वार्षिक परीक्षाओं में छात्रों की सफलता-विफलता का निर्धारण करने में अहम भूमिका निभाती है। परीक्षा की तैयारी के दिनों में छात्र को सर्वाधिक जरूरत होती है अपने अभिभावकों के मोरल सपोर्ट की। अभिभावकों को चाहिए कि वे बच्चों को उचित मार्गदर्शन, सकारात्मक सहयोग और अपेक्षित समय देते हुए प्रोत्साहन भरे दृष्टिकोण से उनका मनोबल बढ़ाएं। अभिभावक उनके खानपान का पूरा ध्यान रखें। मन लगाकर परीक्षाओं की तैयारी करने के साथ-साथ यह भी जरूरी है कि हर समय किताबों से चिपके रहने के बजाय कुछ समय खेलकूद अथवा मनोरंजन इत्यादि क्रियाकलापों के लिए भी निकालें। लगातार पढ़ाई करते रहने से मस्तिष्क पर भारी दबाव पड़ता है, जिससे मानसिक थकान होने के साथ-साथ एकाग्रता भी भंग होती है। इसलिए कई-कई घंटों तक निरन्तर अध्ययन करने के बजाय बीच-बीच में 5-10 मिनट आराम करें और भले ही दिनभर में थोड़े समय के लिए ही सही, मनोरंजन, खेलकूद इत्यादि गतिविधियों में अवश्य हिस्सा लें। मस्तिष्क की एकाग्रता बनाए रखने के लिए व्यायाम एवं योगाभ्यास करना भी जरूरी है।

(लेखक,स्वतंत्र टिप्पणीकार हैं।)

संक्षिप्त समाचार

छात्र-छात्राओं ने खानुआ युद्ध के इतिहास की ली जानकारी

चमकता राजस्थान। धौलपुर(रामदास तरुण)धौलपुर। राष्ट्रीय आविष्कार अभियान के तहत स्थानीय विद्यालय राजकीय महात्मा गांधी विद्यालय सिटी कोतवाली का एक्सपोजर विजिट खानुआ रूपवास गया बच्चों ने 16 मार्च 1527 को बावर और मेवाड़ के राणा सांगा के बीच हुये युद्ध के बारे मे विमिन्न गतिविधियों के बारे में जानकारी हासिल की। प्रधानाचार्य रमन परमार द्वारा बताया गया कि करीब 50 छात्र-छात्राओं ने विजिट में टीम से सवाल किये जिसमें उनके सवालों का एक्सपर्ट ने समाधान किया। एक्सपोजर विजिट का नेतृत्व बालमुकन्द बंसल उप प्राचार्य द्वारा किया गया। इस दौरान संदीप शर्मा, कमल किशोर, सुनीता शर्मा, मिथलेश धाकरे, किरन गहोई, संतोष माथुर, अनिल शर्मा सहित छात्र-छात्रा मौजूद रहे।

साप्ताहिक समीक्षा बैठक कलेक्ट सभागार में आयोजित

चमकता राजस्थान। धौलपुर(रामदास तरुण) आज कलेक्ट सभागार में साप्ताहिक समीक्षा बैठक आयोजित अतिरिक्त जिला कलक्टर ब्रह्मलाल जाट की अध्यक्षता में कलेक्ट्रेट सभागार में आयोजित की गई अतिरिक्त जिला कलक्टर ने कहा कि सभी विभाग सौ दिवसीय कार्य योजना को अधिक से अधिक प्राथमिकता देवें।आमजन द्वारा प्राप्त शिकायतों को संपर्क पोर्टल पर समय पूर्वक अपलोड करायें अतिरिक्त जिला कलक्टर ने मुख्य चिकित्सा एवं स्वास्थ्य अधिकारी जयंती लाल मीणा को शुद्ध आहार मिलावट पर वार अभियान के तहतअधिक से अधिक खाद्य पदार्थों की सैंपलिंग कराये जाने हेतु निर्देशित किया। उन्होंने कहा कि ब्लॉक मुख्य चिकित्सा एवं स्वास्थ्य अधिकारियों द्वारा स्वास्थ्य केंद्रों के निरीक्षण की नियमित मॉनिटरिंग की जाये। उन्होंने नगर परिषद को शहर में ड्रेनेज प्रबंधन हेतु सीवरेज की नियमित अंतराल पर सफाई हेतु निर्देशित किया। उन्होंने सम्पर्क पोर्टल पर लंबित प्रकरणों एवं जन अभाव अभियोग के प्रकरणों का निस्तारण करने हेतु सभी संबंधित विभागों को निर्देशित किया। इस अवसर पर विभिन्न विभागों के जिला स्तरीय अधिकारीगण उपस्थित रहे।

हेमलता बैरवा के सस्पैंड के विरोध में रा. शि.संघ अंबेडकर भुसावर एसडीएम को आज सौपेंगे ज्ञापन

चमकता राजस्थान। भुसावर (राजवीर सिंह)राजस्थान शिक्षक संघ अंबेडकर ब्लॉक अध्यक्ष भुसावर वीरसिंह अध्यापक ने बताया कि राजस्थान प्रदेश अध्यक्ष राजस्थान शिक्षक संघ अंबेडकर के आदेशों की अनुपालना में दिनांक 27 फरवरी 2024 को अध्यापिका हेमलता बैरवा के सस्पैंड के विरोध में मुख्यमंत्री राजस्थान सरकार के नाम उपखण्ड अधिकारी भुसावर के मार्फत ज्ञापन प्रेषित किया जाएगा जिसमें आप सभी साथी शाम 4: 30 बजे उपखंड कार्यालय भुसावर पर उपस्थित हो।

नगरपालिका अधिशासी अधिकारी रविंद्र सिंह ने किया कार्यभार ग्रहण

चमकता राजस्थान। धौलपुर(रामदास तरुण) की रिपोर्ट बाड़ी नगर पालिका में लंबे समय से अधिशासी अधिकारी का पद खाली चल आ रहा था! इस पद को विकास अधिकारी पंचायत समिति बाड़ी के रामजीत सिंह को कार्यवाहक लगा रखा था! आज नगर पालिका के अधिशासी अधिकारी रविंद्र सिंह ने पदभार ग्रहण किया है इस मौके पर होतम सिंह चेयरमैन प्रतिनिधि द्वारा फंटा एवं पुष्पमाला पहना कर व नगरपालिका अध्यक्षा कमलेश देवी ने पुष्प भेंट कर स्वागत सम्मान किया! इस कार्यक्रम के मौके परऔर सिंह ने पदभार ग्रहण करते समय कहा कि राज्य सरकार और केंद्र सरकार की जन कल्याणकारी योजनाओं का लाभ लोगों तक पहुंचाऊंगा! बाड़ी नगर पालिका क्षेत्र की जन समस्याओं का भी किया जाएगा समाधान, रणनीति बनाकर और लोगों से सुझाव लेकर किया जाएगा समस्याओं का समाधान!

फायर ब्रिगेड का दुरुपयोग सरकारी तंत्र द्वारा डकैती

चमकता राजस्थान

धौलपुर(रामदास तरुण) जिला धौलपुर के सरमथुरा उपखण्ड में आपको भली प्रकार मालूम होगा के फायर ब्रिगेड का वर्तमान हालत में कितना अहम रोल है। अचानक आग लगने पर जान माल की रक्षा के लिए फायर ब्रिगेड 24 घंटे उपलब्ध रहती है और हर कोई फायर ब्रिगेड के लिए सड़क पर रास्ता छोड़ देता है। लोक कल्याणकारी देश में नगर पालिका स्तर पर फायर ब्रिगेड की कई लाख रुपए की फायर ब्रिगेड की गाड़ियां उपलब्ध कराई गई है। सरमथुरा में भी ऐसी एक फायर ब्रिगेड की गाड़ी है! जो समय-समय पर नागरकों की जान माल की रक्षा के लिए काम आती है लेकिन सरमथुरा में यही फायर ब्रिगेड की गाड़ी शौचालय साफ करने और शौचालय की टंकियां में पानी भरने की के काम में ली जा रही है। सरमथुरा में करौली बस स्टैंड की शौचालय की टंकियां में पानी भरते समय लिया गया चित्र आमजन के दिमाग में बिजली चमक रही है कि आखिर सरमथुरा में फायर ब्रिगेड की गाड़ियों के साथ क्या हो रहा है। जब फायर ब्रिगेड आई है तो उससे फायर ब्रिगेड के फायरमैन ही पानी भर रहे होंगे तो यह फायरमैन की ड्यूटी का दुरुपयोग है और सुरक्षा मिशन,सुरक्षा उपकरण और सुरक्षा में तैनात कर्मियों का दुरुपयोग है। ऐसा प्रकरण शायद ही देश में कभी देखने को मिला हो लेकिन जहां नियमों को तक पर रखा जाता है उसे धौलपुर कहते हैं ऐसा आमजन का मानना है। नगरपालिका के समूचे अधिकारी भली भांति परिचित है कि फायरब्रिगेड की गाड़ी को इस प्रकार ऐसे कार्यों में तैनात करना एक डकैती के काम से कम नहीं है। आमजन मानता है कि सरमथुरा में कुछ भी मुमकिन है क्योंकि यहां पर नियमों की धज्जियां आए दिन उड़ती रहती हैं। फायर ब्रिगेड के कर्मियों को रैन बसेरे में भी लगाया गया है। यह समझा जा सकता है कि यदि रात को अचानक आग लगने की घटना हो जाए तो फायरमैन रैन बसेरे से कैसे जाएगा क्योंकि उसकी ड्यूटी भी रन बसेरे में काफी महत्वपूर्ण होती है स्थानीय लोगों से पूछने से पता चला है कि पहले भी बाड़ी और करौली बस स्टैंड के शौचालय को फायर ब्रिगेड की गाड़ी से साफ किया जाता रहा है और मामला 13 फरवरी का है। स्थानीय लोग बताते हैं कि शौचालय में पानी की सप्लाई नगरपालिका से उपलब्ध नहीं है इसलिए फायर ब्रिगेड की गाड़ी का प्रयोग किया जाता है, यह प्रकरण बेहद मजाक वाला है। सवाल यह भी उठता है कि बिना जलापूर्ति के अब तक यह दोनों शौचालय नागरकों के लिए किस प्रकार सेवा दे रहे हैं। कल 26 फरवरी को भी फिर से फायर ब्रिगेड की गाड़ी सरमथुरा के बाडी बस स्टैंड पर शौचालय साफ करते देख गया। स्थानीय नागरिक बताते हैं के गत 6 महीने पहले मोठीयापुरा की बस बिजली के करेंट से जल गई थी जिसकी आग बुझाने के लिए नगरपालिका सरमथुरा की फायर ब्रिगेड की गाड़ी आई लेकिन आग बुझाते समय उसका पानी खत्म हो गया और गाड़ी फिर से पानी लेने गई लेकिन जब तक पूरी गाड़ी जल गई, अतः यह सुरक्षा से समझौता है। इनका कहना है : फायर ब्रिगेड की गाड़ियों का शौचालय के लिए काम में लेना सुरक्षा संबंधित शर्तों से समझौता है। सुरक्षा नियमों और अधिकारों से आमजन को वंचित नहीं करना चाहिए फिर भी कुशासन में कुछ भी हो सकता है जिसका केंद्र बिंदु अब सरमथुरा नगरपालिका है। दोषी अधिकारियों के खिलाफ तुरंत कार्रवाई करनी चाहिए।

सांसद डॉ.मनोज राजौरिया के आतिथ्य में धौलपुर रेलवे स्टेशन स्टेशन का पुनर्विकास कार्यक्रम आयोजित

चमकता राजस्थान

धौलपुर (रामदास तरुण) धौलपुर रेलवे स्टेशन का पुनरविकास कार्यक्रम सांसद डॉ. मनोज राजौरिया ने धौलपुर जिले को अमृत योजना की सौगात देने के लिए धौलपुर जिले की जनता की ओर से हार्दिक आभार जताया और धन्यवाद ज्ञापित किया। अमृत रेलवे स्टेशन योजना के अंतर्गत धौलपुर रेलवे स्टेशन आधुनिक सुविधाओं से सुसज्जित होगा जिससे आमजन को लाभ मिलेगा।प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी द्वारा वर्चुअल रूप से 554 अमृत स्टेशनों का शिलान्यास एवं 1500 आरओबी, आरयूबी का शिलान्यास एवं लोकार्पण किया। जिसमें आगरा मंडल के 7 अमृत स्टेशनों का शिलान्यास एवं 35 आरओबी,आरयूबी का शिलान्यास,लोकार्पण किया। धौलपुर स्टेशन इस योजना के तहत चिन्हित स्टेशनों में से एक है। आगरा मंडल के धौलपुर स्टेशन अमृत स्टेशन योजना के तहत लगभग 27.85 करोड रुपए की लागत से पुनर्विकास किया जा रहा है। यह योजना दीर्घकालिक दृष्टिकोण के साथ निरंतर आधार पर स्टेशनों के विकास की परिकल्पना करती है। इसमें स्टेशन पहुंच, सर्कुलेटिंग एरिया, वेटिंग हॉल, शौचालय, आवश्यकतानुसार लिफ्ट,एस्केलेटर, स्वच्छता, मुफ्त वाई-फाई, स्थानीय उत्पादों के लिए कियोस्क जैसी सुविधाओं में सुधार के लिए मास्टर प्लान तैयार करना और चरणों में उनका कार्यान्वयन शामिल है। प्रत्येक स्टेशन पर आवश्यकता को ध्यान में रखते हुए एक स्टेशन एक उत्पाद, बेहतर यात्री सूचना प्रणाली, कार्यकारी लाउंज, व्यावसायिक बैठक के लिए नामांकित स्थान, भूनिर्माण आदि जैसी योजनाएं शामिल है। इस योजना में इमारत में सुधार, स्टेशन को शहर के दोनों तरफ से एकीकृत करना, मल्टी-मॉडल एकीकरण, दिव्यांगजनों के लिए सुविधाएं, टिकाऊ और पर्यावरण के अनुकूल समाधान, गिट्टी रहित ट्रैक का प्रावधान चरणबद्धता और व्यवहार्यता की परिकल्पना की गई है। रेलवे स्टेशन धौलपुर में कार्य के अंतर्गत परिसर क्षेत्र का विकास, उद्घोषणा प्रणाली, वाइड एफओबी, डिजिटल प्लेटफार्म घड़ी, एफओबी लिफ्ट, हाई मास्ट टावर, बेंच,सी सी टी बी, प्लेटफार्म शेड, कोच गाइडेंस डिस्प्ले बोर्ड, इलेक्ट्रॉनिक ट्रेन इंडिकेशन बोर्ड,डू कलर डिस्प्ले बोर्ड,अग्रभाग सुधार आदि शामिल हैं।

भारत विकास परिषद के तत्वाधान में 48 वॉ रक्तदान शिविर का हुआ आयोजन

चमकता राजस्थान। हिंडौन (राजवीर सिंह) भारत विकास परिषद के सौजन्य से 48 वा रक्तदान शिविर स्व सुशीला देवी की पुण्यतिथि के उपलक्ष्य में रक्तदान शिविर का आयोजन 26 फरवरी सोमवार को किया गया। रक्तदान के क्रम को बढ़ाते हुए रक्तदान किया गया इस मौके पर समाजसेवी पुष्पेंद्र गारूवाल ने अपने जीवनकाल में 26 बार रक्तदान कर मानवता के लिए बड़ी मिशाल कायम की है। राजकीय जिला अस्पताल हिंडौन पीएमओ डॉ पुष्पेन्द्र गुप्ता और भारत विकास परिषद सदस्यों के द्वारा रक्तदाता पुष्पेंद्र गारूवाल को शील्ड और प्रशस्ति पत्र देकर सम्मानित किया।

गांव बांसी में हाई वोल्टेज आने से घरेलू उपकरण फुंके,3 जने झुलसे

चमकता राजस्थान। वैर (राजवीर सिंह) उपखंड के गांव बांसी में सिंगल फेस ट्रांसफार्मर से घरों में हाई वोल्टेज आने से घरेलू उपकरण जल गए वही 2 जने करंट लगने से झुलस गए।एक भैंस की भी चपेट में आने से मौत हो गई।

गांव बांसी निवासी केशव देव चौधरी,गिर्राज सिंह, मेघ सिंह ग्रामीणों ने बताया कि गांव बांसी में घरेलू कनेक्शन का विद्युत ट्रांसफॉर्मर कई दिनों से खराब स्थिति में था।जिसकी शिकायत कई बार बिजली विभाग के अधिकारी एवं कर्मचारियों से की गई।लेकिन आज तक कोई समस्या का समाधान नहीं हुआ।रविवार को दोपहर बाद अचानक करीब एक दर्जन से अधिक घरों में हाई वोल्टेज का करंट दौड़ पड़ा जिससे घरों में लगे विद्युत उपकरण जल गए। करंट की चपेट में आने से नबल सिंह पुत्र मानसिंह जाट की एक भैंस की मौत हो गई।वही जतिन पुत्र केशव चौधरी, आशुतोष पुत्र महाराज सिंह एवं एक महिला महेंद्री पत्नी उमेश जाट करंट से झुलस गए।जिसकी सूचना प्रशासन को दी गई।लेकिन प्रशासन की ओर से कोई भी मौके पर नहीं पहुंचा। करंट से झुलसे लोगों का निजी चिकित्सक से उपचार करवाया।ग्रामीणों ने यह भी आरोप लगाया है की इससे पहले भी इस प्रकार की स्थिति आई थी। लेकिन हादसा टल गया।लाइनमैन से भी ट्रांसफार्मर बदलने की शिकायत की थी लेकिन लाइनमैन 2000 रुपए की मांग करता था।जिसके चलते विद्युत ट्रांसफार्मर नही बदला।बिजली विभाग के अधिकारियों व कर्मचारियों की लापरवाही का खामियाजा अब ग्रामीणों को भुगतना पड़ा।

28 को प्रस्तावित किसान सम्मेलन गोविन्द पुरा में तैयारिया जोरों पर

किसान नेता इन्दल सिंह और मुरारी लाल सैनी ने किया अनेक गाँवों का दौरा

चमकता राजस्थान

वैर(राजवीर सिंह)26 फरवरी । सिंचाई पानी और एनसीआर से छुटकारा पाने जैसी मागों को लेकर 28 फरवरी को वैर तहसील के अनेक गाँवों के किसानों का सम्मेलन ग्राम पंचायत मुख्यालय गोविन्द पुरा में होगा।किसान सम्मेलन की तैयारियों को लेक र किसान नेता इन्दल सिंह जाट और माली सैनी आरक्षण संघर्ष समिति के संयोजक मुरारी लाल सैनी ने क्षेत्र के अनेक गॉवों में तैयारियों को लेकर जन सम्पर्क किया।

दोनों नेताओं ने कहा कि पूरे जिले में पानी का गम्भीर संकट हैं और खेती बिना पानी के सूख रही है।उन्होंने कहा कि भरतपुर, डीग जिलों को राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र (एनसीआर) में शामिल होने से जनता को कोई फायदा नहीं हुआ उल्टे नुकसान उठाने पड़ रहे है । किसान नेता इन्दल सिंह ने कहा कि भरतपुर मिले में पहले से भी बहुत ज्यादा बेरोजगारी है अगर सरकार ने पुराने वाहनों को बन्द किया तो भरतपुर और डीग जिलों में लाखों लोग और बेरोजगार हो जायेगे। किसान' मजदूर नये ट्रैक्टर' मोटरसाईकिल' जीप, कार नहीं खरीद सकते क्योंकि किसान पहले से ही कर्ज में डूबा हुआ है । मुरारी लाल सैनी ने कहा कि एकीकृत पीकेसी (ईआरसीपी) के तहत सुखी नदियों वाणगंगा नदी ' गम्भीर और रुपारेल में पानी लाने तथा एनसीसार से हटाने के लिये संघर्ष जारी रहेगा ।

जनसम्पर्क अभियान में भगवान सिंह सैनी' अमर सिंह सैनी' सम्पत सैनी भी साथ में थें।दोनों नेताओं ने ग्राम रमासपुर, हिसामड़ा , गाँगरौली ' नावर ' प्रेमनगर' हिसामड़ा का मन्दिर' खरबैरा' जटबलाई, सैनियों के नगलों आदी गाँवों में जनसम्पर्क किया। किसान सम्मेलन 11 बजे से आरम्भ होगा।

अमृत भारत स्टेशन देश की विरासत और विकास के प्रतीक - प्रधानमंत्री

41 हजार करोड़ रूपए की रेल परियोजनाओं का शिलान्यास एवं लोकार्पण कार्यक्रम

चमकता राजस्थान

धौलपुर (रामदास तरुण) धौलपुर, 26 फरवरी। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने कहा कि अमृत काल में भारत की प्रगति की रेल तीव्र गति से दौड़ रही है। नया भारत अभूतपूर्व गति एवं कौशल से कार्य कर रहा है। आज हम बड़े सपने देख रहे हैं और उन्हें पूरा करने में दिन-रात जुटकर कार्य भी कर रहे हैं। भारत आज विश्व की 5 वीं सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था बन गया है। मोदी ने कहा कि देश के युवा विकसित भारत के सूत्रधार बन रहे हैं। विकसित भारत के सपने को साकार करने में उनकी भूमिका बे-हद महत्वपूर्ण है। मोदी ने सोमवार को वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग के माध्यम से अमृत भारत स्टेशन योजना के अन्तर्गत देश भर में लगभग 41 हजार करोड़ रूपए की लागत से 553 रेलवे स्टेशनों के पुनर्विकास कार्य के शिलान्यास और 1500 रोड ओवरब्रिज एवं अंडरपास के लोकार्पण एवं शिलान्यास कार्यक्रम को सम्बोधित कर रहे थे। इनमें प्रदेश के 21 रेलवे स्टेशन एवं 112 रोड ओवरब्रिज एवं अंडरपास शामिल हैं। देश भर के 2 हजार 21 स्थानों पर यह कार्यक्रम आयोजित हुआ जिसमें 40 लाख से अधिक लोग जुड़े मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा ने सांगानेर रेलवे स्टेशन पर आयोजित कार्यक्रम में शिरकत की और प्रधानमंत्री का इन सौगातों के लिए आभार व्यक्त किया।कार्यक्रम को सम्बोधित करते हुए प्रधानमंत्री ने कहा कि आज का भारत परिवर्तन के दौर से गुजर रहा है जिसका साक्षात उदाहरण भारतीय रेलवे है। एक दशक पहले रेलवे का औसत वार्षिक बजट 45 हजार करोड़ रूपए था जो अब बढ़कर ढाई लाख करोड़ रूपए से अधिक हो गया है।उन्होंने कहा कि दस साल पहले वंदे भारत जैसी सेमी हाईस्पीड और अमृत भारत जैसी आधुनिक ट्रेनों की कल्पना भी मुश्किल थी मगर आज गरीब और मध्यम वर्ग के लोग एयरपोर्ट पर उपलब्ध वर्ल्ड क्लास सुविधाएं रेलवे स्टेशन पर पा रहे हैं। मोदी ने कहा कि अमृत भारत स्टेशन देश की विरासत और विकास के प्रतीक हैं। प्रत्येक स्टेशन स्थानीय शहर की विशेषता को दर्शाता है। उन्होंने कहा कि इस योजना के अन्तर्गत रेलवे स्टेशनों के पुनर्विकास का कार्य सघन रूप से किया जा रहा है, जिससे युवाओं को रोजगार एवं स्वरोजगार के समुचित अवसर मिल रहे हैं।

संक्षिप्त समाचार

हेरिटेज निगम आयुक्त ने जोन एवं वार्डों के कुल 10 सेवानिवृत्त होने वाले कर्मचारियों को सम्मानित किया

चमकता राजस्थान। जयपुर!(खलील कुरैशी) 26 फरवरी। नगर निगम जयपुर हेरीटेज आयुक्त अभिषेक सुराणा ने सोमवार को निगम के सभागार भवन में समस्त जोनों व वार्डों में तैनात कुल 10 सेवानिवृत्त कर्मचारियों को साफा व शॉल पहनाकर सम्मानित किया। इस दौरान हेरिटेज आयुक्त अभिषेक सुराणा ने 1.अब्दुल रशीद 2. गुलाब 3. सुशीला 4. सोहनी बन्बल 5. राजू 6. कैलाश कुमार 7. गीता 8. सीता देवी 9. मंगल कुमार 10. विद्या देवी 11. अब्दुल रशीद आदि कर्मचारियों को सम्मानित किया।इस दौरान अतिरिक्त आयुक्त मुख्यालय रौनक बैरागी, उपायुक्त स्वास्थ्य नूर मोहम्मद, उपायुक्त मुख्यालय मनीषा यादव, उपायुक्त सतर्कता एस के मेहरानियां, सहायक अभियंता मुख्यालय भरत लाल मीणा, ओएसडी विक्रम सिंह आदि निगम के अधिकारीगण व कर्मचारी गण उपस्थित थे।

हैरिटेज निगम के किशनपोल जोन में किया अवैध निर्माण को 180 दिन के लिये सीज आयुक्त के निर्देश पर हुई कार्रवाई

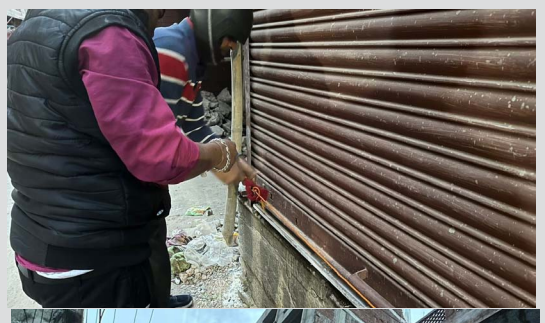

चमकता राजस्थान। जयपुर (खलील कुरैशी), 26 फरवरी। नगर निगम जयपुर हैरिटेज आयुक्त अभिषेक सुराणा के निर्देश पर उपायुक्त किशनपोल जोन पूजा मीणा, उपायुक्त सर्तकता एस के मेहरानियाँ, कनिष्ठ अभियन्ता मनोज मीणा एवं सुरेश शर्मा (गजधर) द्वारा मय पुलिस जाप्ता के बिना ईजाजत/ अवैध निर्माणों व माननीय न्यायालय के आदेशों के विपरित किये गये निर्माणों को 180 दिन के लिये सीज किया गया।कार्रवाई के दौरान 1 शकुन्तला व हर्षित अग्रवाल पुत्र गणेश अग्रवाल मकान नं. 1424, पिपलियों का चौक 2. सुनील पुत्र इन्द्र कुमार मकान नं. 378, महर निवास हनुमान जी का रास्ता 3. रवि टोडवाल पुत्र खेमचन्द टोडवाल मकान नं. 376, सुराणा भवन हनुमान जी का रास्ता 4. मनोज सोनी पुत्र गोविन्द सोनी मकान नं. 600, /01 बॉरडी का रास्ता 5. निर्माणकर्ता/मकान मालिक नं. 942-943, महेरों का रास्ता कावंटियों की पिपली घाटगेट 6 नफीस भाई मकान नं. 4540 घोड़ा निकास रोड़ चौकडी रामचन्द जी 7. निर्माणकर्ता मकान नं. 1145-महेरों का रास्ता रामगंज बाजार 8. खरूनिसा पत्नि निसार अहमद मकान नं. 912-913, कावंटियों की पिपली के पास हल्दियों का रास्ता आदि स्थानों पर अवैध निर्माणों को सीज किया गया।

गैस एजेंसी संचालक से 3 लाख की लूट की वारदात का खुलासा :

- **48 घंटे के अंदर पुलिस ने दो आरोपियों को गिरफ्तार कर घटना में प्रयुक्त बाइक की जप्त**

चमकता राजस्थान। अलवर, 26 फरवरी। थाना एनईबी, साइक्लोन सैल व डीएसटी ने गुरुवार को गैस एजेंसी संचालक से गन पॉइंट पर हुई 3 लाख रुपए की लूट के मामले का खुलासा कर दो आरोपियों को घटना में प्रयुक्त वाहन सहित गिरफ्तार किया है। फिलहाल पुलिस की टीम लूटी गई रकम और हथियार की बरामदगी के लिए आरोपियों से पूछताछ कर रही है।एसपी आनंद शर्मा ने बताया कि 23 फरवरी की शाम जवाहर नगर मुंगस्का स्थित सुमन गैस एजेंसी के संचालक ने रिपोर्ट दी कि रात करीब 9:00 बजे वह एजेंसी से 3 लाख लेकर निकला था, रास्ते में दो बाइक सवारों ने उसकी गाड़ी के आगे आकर रोक लिया। गन पॉइंट पर उससे पैसे लेकर भाग गए। रिपोर्ट और मुकदमा दर्ज कर जांच शुरू की गई।घटना के खुलासे के लिए गठित की गई टीम द्वारा कड़ी से कड़ी जोड़कर तकनीकी संसाधन एवं प्राप्त आसूचना के आधार पर वारदात करने वाले अभियुक्तों की पहचान कर दो आरोपियों को गिरफ्तार किया गया है। जिनसे घटना में प्रयुक्त बाइक जप्त की गई है। मामले में थाना एनईबी से कांस्टेबल नरेश कुमार और डीएसटी से कांस्टेबल कानाराम की विशेष भूमिका रही है।

फायरिंग व लूट के प्रयास की घटना के 5 आरोपी गिरफ्तार, एक देशी पिस्टल, स्विफ्ट डिजायर कार व दो बाइक जब्त

चमकता राज़स्थान

दौसा(खलील कुरैशी)26 फरवरी। थाना महवा पुलिस की टीम ने फसल बेच कर लौट रहे किसान पर समलेटी गांव में फायरिंग कर लूट के प्रयास के मामले में त्वरित कार्रवाई कर घटना में शामिल पांच आरोपियों को समलेटी-हुडला के जंगल में पीछा कर गिरफ्तार किया है।इनके पास से पुलिस ने एक पिस्टल तथा घटना में प्रयुक्त एक स्विफ्ट डिजायर कार, एक बिना नंबर की स्प्लेंडर बाइक व एक अपाचे बाइक बरामद की हैएसपी रंजीता शर्मा ने बताया कि मामले में आरोपी बदमाश हंसराम उर्फ छुट्टन मीना पुत्र गुलाब (21) निवासी

नयागांव थाना महवा, सतीश मीना पुत्र शिंभू मीना (22) निवासी सांथा थाना महवा, हरिकिशन उर्फ बच्चा पुत्र सीताराम प्रजापत (22) निवासी रिंदली थाना मंडावर, कबीर उर्फ शैलेंद्र कुमार मीना पुत्र ओमप्रकाश (19) निवासी लक्ष्मी विहार कॉलोनी महवा रामोतार मीणा पुत्र हर सहाय (28) निवासी खेड़ली कला थाना मंडावर को गिरफ्तार किया गया हैएसपी शर्मा ने बताया कि घटना के संबंध में गगवाना थाना बालाहेड़ी निवासी गौरव महर द्वारा रिपोर्ट दी गई कि शनिवार दिन में सरसों की फसल महवा मंडी में बेचकर वह अपने जानकार अभिषेक व सचिन कुमार के साथ स्कूटी से लौट रहा था। समलेटी बस स्टैंड पर अपने मिलने वाले मोनू मीणा व वीर मीणा के पास रुका। कुछ देर में कार से सन्नी मीना, सुनील व तीन अन्य व्यक्ति एवं स्प्लेंडर बाइक से कबीर मीणा व एक अन्य नीचे उतरे।
चारों ओर से घेर कर बदमाशों ने उससे पैसे छीनने का प्रयास किया। जब उसने विरोध किया तो सन्नी ने पिस्टल से फायर कर दिया। झुक जाने की वजह से राउंड सिर के ऊपर से निकल गया। शोर सुनकर गांव के काफी लोग आ गए तो कार छोड़ कर चार व्यक्ति बिना नंबर की बाइक से, दो व्यक्ति अपाचे बाइक पर तथा एक व्यक्ति पैदल भाग गया।घटना की गंभीरता को देखते हुए आरोपियों की गिरफ्तारी के लिए सीओ प्रेम बहादुर निर्भय के सुपरविजन एवं एसएचओ महवा जितेंद्र सिंह सोलंकी के नेतृत्व में गठित की गई टीम द्वारा समलेटी हुडला के जंगलों में पीछा कर इन पांच बदमाशों को गिरफ्तार किया गया है। जिनसे घटना में शामिल अन्य बदमाशों तथा वारदातों के संबंध में गहनता से अनुसंधान किया जा रहा है।

सीआईडी की टीम ने जोधपुर की मंडोर मंडी में स्थित गोदाम में मारा छापा, 20000 लीटर मिलावटी घी मिला

चमकता राजस्थान

जयपुर (खलील कुरैशी)25 फरवरी। पुलिस मुख्यालय क्राइम ब्रांच की टीम ने जोधपुर पश्चिम जिले के थाना महामंदिर इलाके में मंडोर मंडी स्थित एक गोदाम पर छापा मारा। जहां विभिन्न प्रकार की नामी ब्रांड कंपनियों का लगभग 20000 लीटर मिलावटी घी मिला। देर रात चली इस कार्रवाई के बाद खाद्य विभाग की टीम द्वारा सैंपल लेकर मिलावटी घी को सीज कर दिया। अतिरिक्त महानिदेशक पुलिस अपराध दिनेश एमएन ने बताया कि क्राइम ब्रांच की टीम को सूचना मिली थी कि मंडोर मंडी स्थित एक गोदाम में विभिन्न प्रकार के ब्रांड के देशी घी के पीपे में मिलावटी घी की

पैकिंग कर बाजार में छपाया जा रहा है।
सूचना पर आईजी क्राइम प्रफुल्ल कुमार के पर्यवेक्षण में अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक आशा राम चौधरी एवं इंस्पेक्टर सुभाष सिंह तंवर की टीम गठित की गई। इसमें हेड कांस्टेबल महेश कुमार, रविंद्र सिंह, राकेश, कांस्टेबल नरेश व सुरेश को शामिल किया गया। सूचना की पुष्टि के बाद गठित टीम द्वारा एसएचओ महामंदिर के सहयोग से मंडोर मंडी स्थित ऋषभ ट्रेडर्स के गोदाम पर छापा मारा। मौके पर फूड इंस्पेक्टर रेवन्त सिंह को सूचना देकर बुलाया गया। गोदाम में विभिन्न प्रकार के प्रतिष्ठित ब्रांड के घी के पीपे मिले। जो अलग-अलग जगह से लाकर बेचे जा रहे थे।मौके पर मिले पीपों में करीब 20000 लीटर घी मिला, जिसे प्रथम दृष्टया मिलावटी होने के सन्देह से खाद्य विभाग की टीम ने सैंपल लेकर सीज कर दिया है। लिए गए सैंपल की रिपोर्ट आने पर ही अग्रिम कार्रवाई की जाएगी।इस संपूर्ण कार्रवाई में क्राइम ब्रांच के हेड कांस्टेबल महेश कुमार, रविंद्र सिंह व राकेश एवं कांस्टेबल नरेश कुमार व सुरेश की विशेष भूमिका तथा कांस्टेबल सोहन देव व गंगाराम का तकनीकी सहयोग रहा। टीम का नेतृत्व इंस्पेक्टर सुभाष सिंह द्वारा किया गया। कार्रवाई में एसएचओ महामंदिर शिवपाल मीणा एवं स्वास्थ्य विभाग से फूड इंस्पेक्टर रेवन्त सिंह मय टीम के मौजूद रहे।

पाइप लाइन में लकीज, विगत 1 महीने से बह रहा व्यर्थ पानी

- **अधिकारियों को बार-बार अवगत करवाने पर भी नहीं हुआ समाधान**

चमकता राजस्थान। शाहपुरा (खलील कुरैशी) शहर के वार्ड नंबर 12 स्थित मोरी के नीचे विगत 1 महीने से पाइप लाइन में लकीज के कारण हजारों लीटर पानी व्यर्थ बह रहा है इसी समस्या को लेक र शाहपुरा युवा विकास मंच के अध्यक्ष राजेश मंडोवरा ने मौके पर जाकर जलदाय विभाग के उच्च अधिकारियों व कर्मचारियों को अवगत कराने के बाद भी इस समस्या का समाधान नहीं हुआ है मंडोवरा बताया कि पाइप लाइन में लकीज के कारण हजारों लीटर पानी गंदी नालियों में बह रहा है

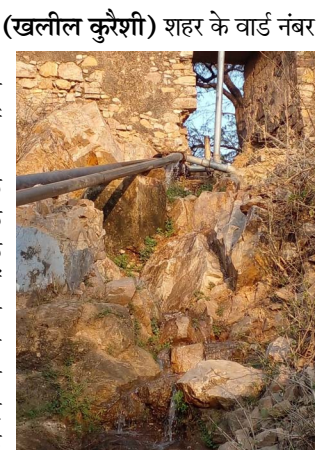

और मौके पर फोटो खींचकर अधिकारियों को व्हाट्सएप के माध्यम से अवगत कराने के बाद भी लकीज पाइपलाइन का काम आज तक नहीं हुआ है पास में रहने वाले हनुमान धानका,महेंद्र धानका ने बताया की लकीज पाइपलाइन के कारण मोहल्ले में पर्याप्त मात्रा में पानी नहीं आ रहा है क्योंकि सारा पानी लकीज के कारण गंदी नालियों में चला जाता है जिसके कारण पानी की समस्या बनी हुई है अधिकारियों से निवेदन है कि जल्द से जल्द लकीज पाइपलाइन को ठीक करवाकर व्यर्थ बह रहे पानी की बर्बादी को बचाएं।

जयपुर विकास प्राधिकरण ने कार्यवाही कर अवैध अतिक्रमणों पर चला बुलडोजर

जेडीए व नगर निगम ग्रेटर ने सामूहिक अभियान के तहत सड़क सीमा से हटाए अतिक्रमण

चमकता राजस्थान

जयपुर! (खलील कुरैशी) 26 फरवरी। जयपुर विकास प्राधिकरण द्वारा जोन-05 नगर निगम के साथ सामूहिक अभियान का आयोजन कर सुओमोटो के तहत गुर्जर की थडी से शान्ति नगर को जाने वाली रोड सीमा को कब्जा-अतिक्रमण मुक्त करवाया गया। मुख्य नियंत्रक प्रवर्त धर्मेन्द्र कुमार यादव ने बताया कि नगर निगम के साथ सामूहिक अभियान का आयोजना कर सुओमोटो के तहत जोन-05 के क्षेत्राधिकार में अवस्थित गुर्जर की थडी से शाति नगर जाने वाली रोड पर मकानो व दुकानों के आगे रोड़ सीमा के दोनो तरफ करीब 150 स्थानों पर अवैध कब्जा-अतिक्रमण कर बनाये गये चबूतरे अत्यधिक लम्बाई में बनी सीढीयॉ लगाये गये थडी, ठेले, तीरपाल, होर्डिंग, साईनबोर्ड, टेबल कुर्सियॉ इत्यादि डालकर किये गये अवैध कब्जे-अतिक्रमणों को नगर निगम के साथ आज जोन-05 के राजस्व व तकनीकी स्टॉफ की निषादेही पर प्रवर्तन दस्ते द्वारा जेसीबी मषीन व मजदूरों की सहायता से हटावाया जाकर रोड सीमा को अतिक्रमण मुक्त करवाया गया। उक्त कार्यवाही उप नियंत्रक प्रवर्तन-01, प्रवर्तन अधिकारी जोन-05 तथा प्राधिकरण में उपलब्ध जाप्ते, लेबर गार्ड व नगर निगम का जाप्ता एवं जोन में पदस्थापित राजस्व व तकनीकी स्टॉफ की निशादेही पर प्रवर्तन दस्ते द्वारा सम्पादित की गई।

द ग्रेट इंडियन ट्रैवल बाजार 2024

फिक्की के प्रतिनिधिमंडल ने उप मुख्यमंत्री दिया कुमारी से की मुलाकात

चमकता राजस्थान। जयपुर। फिक्की के प्रतिनिधिमंडल ने आज उप मुख्यमंत्री दिया कुमारी से मुलाकात कर उन्हें आगामी ग्रेट इंडियन ट्रैवल बाजार (जीआईटीबी 2024) के बारे में जानकारी दी और राज्य में पर्यटन संबंधी कार्यक्रम और पर्यटन के विकास के लिए उनका सहयोग और मार्गदर्शन मांगा। दिया कुमारी ने इस मेगा इन-बाउंड पर्यटन फेयर में भाग लेने की सहमति व्यक्त की। उप मुख्यमंत्री ने इस बात पर भी जोर दिया कि आध्यात्मिक, वाईल्ड लाइफ और वेडिंग टूरिज्म जैसे कुछ प्रमुख क्षेत्र हैं, जिन पर फेयर में मुख्य रूप से फोकस किया जाना चाहिए। फिक्की के प्रतिनिधिमंडल में पूर्व अध्यक्ष, फिक्की, डॉ ज्योत्सना सूरी; फिक्की टूरिज्म एंड कल्चरल कमेटी के चेयरमैन, श्री दीपक देवा; फिक्की राजस्थान स्टेट कांउसिल के को-चेयरमैन, श्री सुरेंद्र सिंह शेखावत और फेडरेशन ऑफ हॉस्पिटैलिटी एंड टूरिज्म ऑफ राजस्थान (एफएचटीआर) के अध्यक्ष, कुलदीप सिंह चंदेला शामिल थे। गौरतलब है कि जीआईटीबी इस वर्ष 5 से 7 मई तक आयोजित होने वाला है।

नगर निगम ग्रेटर का नवाचार: टॉक शो एवं प्रदर्काशनी भी होगा आयोजन

नारी शक्ति वंदन कार्यक्रम 2, 3 एवं 4 मार्च 2024 को जवाहर कला केन्द्र में होगा आयोजन

"सशक्त महिला से समृद्ध समाज की ओर एक पहल" की थीम पर होगा आयोजन

- **अन्तिम दिन फागोत्सव एवं सम्मान समारोह का भी होगा आयोजन**

- **टॉक शो के जरिए शख्सियत से होगी रुबरु..**

» शक्ति वंदन कार्यक्रम में विभिन्न क्षेत्रों में सफलता का परचम लहरा रही महिलाएं भी टॉक शो के जरिये महिलाओं के उत्थान प्रगति समस्याओं पर बातचीत करेगी। जिसके अन्तर्गत युग परिवर्तन की आधारशिला, नारी शक्ति वन्दन, मेरी कहानी मेरी जुबानी डिजिटल लीगल फाइनेन्सियल साक्षरता जैसे महत्वपूर्ण विषयों पर टॉक शो आयोजित होंगे। कार्यक्रम के अन्तिम दिन सम्मान समारोह एवं फागोत्सव आयोजित किया जायेगा। जिसमें विभिन्न क्षेत्रों की 51 महिलाओं को सम्मानित किया जायेगा।

चमकता राजस्थान

जयपुर !(खलील कुरैशी)26 फरवरी। नगर निगम ग्रेटर द्वारा नवाचार करते हुए 2, 3 एवं 4 मार्च 2024 को नारी शक्ति वंदन कार्यक्रम का जवाहर कला केन्द्र में आयोजन किया जायेगा। महापौर डॉ. सौम्या गुर्जर ने सोमवार को प्रेस कॉन्फ्रेंस आयोजित कर बताया कि महिला कौशल से सफलता और सम्मान का महोत्सव, संस्कृति और शक्ति का अद्भूत संगम शक्ति वंदन कार्यक्रम का आयोजन किया जायेगा। डॉ. सौम्या ने बताया कि यह आयोजन महिलाओं के लिए महिलाओं द्वारा किया जा रहा है। इस कार्यक्रम का उद्देश्य महिलाओं को सशक्त कर समृद्ध समाज का निर्माण करना है। महिलाओं के सम्मान, सुरक्षा, स्वास्थ्य, समृद्धि एवं सशक्तिकरण को दृष्टिगत रखते हुए शक्ति वन्दन कार्यक्रम के तहत प्रदर्षनी एवं टॉक शो का आयोजन किया जायेगा। प्रदर्मेशनी 9 सेगमेन्ट होंगे जिसके अन्तर्गत सृजन, श्अन्नम्, वस्त्रम्, सौन्दर्यम्, हरितम स्वच्छ भारत, रत्नम्-वेस्ट टु वेल्थ संस्कृति प्रदर्षित किये जायेंगे। इसके साथ ही षिल्प ग्राम में स्वयं सहायता समूह की महिलाओं की 300 स्टॉल लगायी जायेगी। जिसमें महिलाओं की रचनात्मकता और कौशल से प्रेरित उत्पाद महिलाओं द्वारा ही बेचे जायेंगे। शक्ति वन्दन कार्यक्रम घरेलू, व्यवसायिक महिलाओं, एन्टरप्रेन्योरस स्वयं सहायता समूह सहित शहर की महिलाओं के लिए हूनर दिखाने का अद्भूत अवसर प्रदान कर रहा है।
महिलाएं लिखेगी प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी जी के नाम चिट्ठी डॉ सौम्या ने बताया कि स्टॉल लगाने वाली महिलाओं के साथ-साथ इस कार्यक्रम में आने वाली हर महिला आदरणीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के नाम चिट्ठी लिखेगी। इस चिटठी में मोदी जी के अब तक के महिला क्षेत्र के उत्कृष्ट कार्यों की प्रषंसा करते हुए अन्य अपेक्षाओं का उल्लेख करेगी। इसके साथ ही हस्ताक्षर अभियान में महिलाएं सन्देश सहित अपने हस्ताक्षर भी कर सकेगी।

संक्षिप्त समाचार

नगर निगम ग्रेटर महापौर डॉ सौम्या गुर्जर ने वार्ड 70 स्थित पार्क का किया लोकार्पण

चमकता राजस्थान। जयपुर (खलील कुरैशी) 26 फरवरी। नगर निगम ग्रेटर महापौर डॉ सौम्या गुर्जर ने रविवार को वार्ड नंबर 70 स्थित गुरु गोविंद सिंह पार्क का लोकार्पण किया इसके साथ ही उन्होंने ओपन जिम का भी उद्घाटन किया इस अवसर पर समिति अध्यक्ष,अरुण वर्मा पार्षद राम अवतार गुप्ता, पारस जैन सहित अन्य पार्षद एवं उपायुक्त उद्यान रविंद्र उपस्थित रहे

उद्घाटन से पूर्व महापौर ने आदरणीय प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के मन की बात कार्यक्रम को सुना । लोकार्पण समारोह में महापौर डॉ सौम्या गुर्जर ने 10 से अधिक महिलाओं को तिलक एवं माला पहनकर नारी वंदन सम्मान भी किया डॉ सौम्या गुर्जर ने इस अवसर पर कहा कि डोर टू डोर कचरा संग्रहण की शिकायतों का शत प्रतिशत निस्तारण किया जा रहा है शहर को साफ रखना आम नागरिक की जिम्मेदारी है इसलिए जिम्मेदार नागरिक बने शहर को भी अपना ही घर समझे इसे स्वच्छ व सुंदर रखने में अपनी भागीदारी निभाये जिससे यह शहर स्वच्छ एवं सुंदर हो सकेगा ।

द ग्रेट इंडियन ट्रैवल बाजार 2024 :

फिक्की प्रतिनिधिमंडल की उप मुख्यमंत्री दिया कुमारी से की शिष्टाचार मुलाकात

चमकता राजस्थान। जयपुर (खलील कुरैशी)। फिक्की के प्रतिनिधिमंडल ने उप मुख्यमंत्री दिया कुमारी से मुलाकात कर उन्हें आगामी ग्रेट इंडियन ट्रैवल बाजार (जीआईटीबी) 2024 के बारे में जानकारी दी और राज्य में पर्यटन संबंधी कार्यक्रम और पर्यटन के विकास के लिए उनका सहयोग और मार्गदर्शन मांगा। दिया कुमारी ने इस मेगा इन- बाउंड पर्यटन फेयर में भाग लेने की सहमति व्यक्त की। उप मुख्यमंत्री ने इस बात पर भी जोर दिया कि आध्यात्मिक, वाईल्ड लाइफ और वेडिंग टूरिज्म जैसे कुछ प्रमुख क्षेत्र हैं। जिन पर फेयर में मुख्य रूप से फोकस किया जाना चाहिए। फिक्की के प्रतिनिधिमंडल में पूर्व अध्यक्ष फिक्की डॉ. ज्योत्सना सूरी, फिक्की टूरिज्म एंड कल्चरल कमेटी के चेयरमैन दीपक देवा,फिक्की राजस्थान स्टेट काउंसिल के को-चेयरमैन, सुरेंद्र सिंह शेखावत और फेडरेशन ऑफ हॉस्पिटैलिटी एंड टूरिज्म ऑफ राजस्थान एफएचटीआर अध्यक्ष कुलदीप सिंह चंदेला मौजूद रहे।

चुनावों में राजस्थान को टारगेट करके बदनाम किया : अशोक गहलोत

चमकता राजस्थान। जयपुर। विराटनगर में जानलेवा हमले में घायल युवती से मिलने एस.एम.एस. अस्पताल पहुंचे पूर्व मुख्यमंत्री अशोक गहलोत ने कहा कि बीजेपी ने चुनावों में राजस्थान को टारगेट करके बदनाम किया। जबकि अपराध के मामले में राजस्थान की स्थिति तुलनात्मक दृष्टि से मध्यप्रदेश, उत्तर प्रदेश और अन्य राज्यों से अच्छी थी। इन्होंने चुनावों में हम पर लगातार आरोप लगाए। राजस्थान को टारगेट करके बदनाम किया, वो गलत था।फिर भी जो आरोप लगाए, उसे हमने बर्दाश्त कर लिया। हमारी सरकार चली गई। लेकिन कोई बात नहीं, यह डेमोक्रेसी है।राजस्थान में पिछले ढाई महीने से क्या हो रहा है। दुख इस बात का है कि राजस्थान भर से रेप, डकैती, गुंडागर्दी की खबरें आ रही हैं। गहलोत ने कहा- बीजेपी ने चुनावों में जो हम पर आरोप लगाए,वो नई सरकार की प्राथमिकता में होना चाहिए। वैसी घटनाएं इससरकार में नहीं होनी चाहिए। लेकिन पिछले ढाई माह से राजस्थान में क्या हो रहा है। प्रतिदिन अपराध की गंभीर घटनाएं हो रही हैं।

उन्होंने कहा कि नई सरकार की प्राथमिकता में होना चाहिए कि रेप,डकैती, गुंडागर्दी की घटनाएं राजस्थान में नहीं हो। दुख इस बात का है कि रोज राजस्थान भर से इस तरह की गंभीर घटनाएं सामने आ रही हैं। उन्होंने कहा- जिस तरह से विराटनगर में युवती के साथपहले रेप किया गया। फिर उसे धमकियां दी गई। आरोपी को दो माह में जमानत मिल गई।

पिंक सिटी क्रिकेट प्रीमीयर लीग प्रतियोगिता 2024:

- **पिंक सिटी प्रेस क्लब रॉयल क्रिकेट टीम ने टाईम्स ऑफ इंडिया क्रिकेट टीम को 73 रनों से हराकर शानदार जीत दर्ज की**

चमकता राजस्थान। जयपुर!(खलील कुरैशी) पिंक सिटी प्रेस क्लब जयपुर द्वारा आयोजित पत्रकारों की क्रिकेट प्रतियोगिता (पी.पी.एल.) पिंक सिटी प्रेस क्लब प्रीमीयर लीग 2024 के दौरान पिंक सिटी प्रेस क्लब रॉयल क्रिकेट टीम ने आरसीए क्रिकेट मैदान एस.एम.एस. स्टेडियम जयपुर में टाईम्स ऑफ इंडिया क्रिकेट टीम को 73 रनों से हराकर की शानदार जीत दर्ज की गौरतलब है पिंक सिटी प्रेस क्लब जयपुर के महासचिव रामेंद्र सोलंकी ने मैच के लिए टॉस उछाला जिसमें टाईम्स ऑफ इंडिया टीम ने टॉस जीतकर पहले फील्डिग करने का निर्णय लिया इसके तहत पहले बल्लेबाजी करते हुए पिंक सिटी प्रेस क्लब रॉयल टीम ने 224 रनों का स्कोर खड़ा कर दिया जिसके जबाब में टाईम्स ऑफ इंडिया क्रिकेट टीम ने 151 रन बना सकी उल्लेखनीय है कि पिंक सिटी प्रेस क्लब रॉयल क्रिकेट टीम के कप्तान राहुल भारद्वाज ने टीम की जीत का श्रेय पूरी टीम के सामूहिक शानदार प्रदर्शन को दिया इस दौरान पिंकी सिटी प्रेस क्लब के पदाधिकारी पूर्व महासचिव मुकेश चौधरी, तथा वर्तमान पदाधिकारी मोनिका शर्मा सहित विभिन्न गणमान्य पत्रकार जनों ने हौसला अफजाई करी

भाजपा युवा मोर्चा के पूर्व प्रदेश मंत्री देवाई सिंह के नेतृत्व में कार्यकर्ताओं ने केंद्रीय जल शक्ति मंत्री से की मुलाकात

राजस्थान के हर व्यक्ति को मिलेगा पीने योग्य स्वच्छ जल : गजेंद्र सिंह

चमकता राजस्थान

शाहपुरा (खलील कुरैशी) भाजपा युवा मोर्चा के पूर्व प्रदेश मंत्री देवायुष सिंह के नेतृत्व में भाजपा कार्यकर्ताओं ने केंद्रीय जल शक्ति मंत्री गजेंद्र सिंह शेखावत से मुलाकात कर शाहपुरा व विराट नगर को ईआरसीपी योजना से जोड़ने की मांग की। गौरतलब है कि केंद्रीय मंत्री शेखावत रविवार रात को विराट नगर विधानसभा क्षेत्र के पनदो गांव में एक सामाजिक शादी समारोह में शिरकत करने के लिए आए थे। इस दौरान भाजपा युवा मोर्चा के पूर्व प्रदेश मंत्री देवायुष सिंह ने शाहपुरा

में विराटनगर क्षेत्र में गिरते भूमिगत जल स्तर के बारे में अवगत कराया। लोगों को पेयजल व सिंचाई का पानी उपलब्ध कराने के लिए ईआरसीपी योजना से जोड़ने की मांग की। इस पर केंद्रीय मंत्री शेखावत ने कहा कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में देश के प्रत्येक राज्यों में जनता की खुशहाली के लिए कई योजनाएं संचालित की जा रही है। इसी कड़ी में राजस्थान प्रदेश में भी हर घर तक पीने योग्य स्वच्छ जल पहुंचने के लिए जल जीवन मिशन योजना का काम शुरू किया गया था। जिसके तहत 2024 तक कार्य पूर्ण करना था। लेकिन प्रदेश में कांग्रेस सरकार के भ्रष्टाचार के चलते जल जीवन मिशन का काम बहुत धीमी गति से हुआ। इसमे भ्रष्टाचार होने से काम बहुत घटिया हुआ है। जिसकी जांच जारी है। अब प्रदेश में भाजपा सरकार बनने के बाद लोकसभा चुनाव के बाद विकास के कामों में तेजी आएगी। उन्होंने कहा कि आरसीपी योजना में शाहपुरा विराटनगर को भी जोड़ना प्रस्तावित है। हर व्यक्ति को पीने योग्य जल मिले इस कड़ी में तीव्र गति से काम होगा। इस दौरान भाजपा के पूर्व प्रदेश मंत्री महेन्द्र यादव, विराटनगर विधायक कुलदीप धनकड़ के पुत्र आशीष धनकड़, बीजेपी एससी मोर्चा के जिला अध्यक्ष एडवोकेट बीएस बेनीवाल, भाजपा जिला मीडिया प्रभारी सुभाष जोशी, मनोहरपुर नगर पालिका अध्यक्ष प्रतिनिधि शंकर प्रजापत, जमवारामगढ़ उत्तर भाजपा मंडल महामंत्री अजय लाटा, युवा नेता आदित्य धाबाई, डॉ. छाजूराम गुर्जर सहित अन्य गणमान्य लोग मौजूद रहे।

आई.ए.एस. टीम ने जीता सी.एस. चैलेंजर कप

चमकता राजस्थान

जयपुर!(खलील कुरैशी)26 फरवरी। राजस्थान राज्य सिविल सेवा सी.एस. चैलेंजर कप प्रतियोगिता 2023-24 में टेनिस प्रतियोगिता का फाइनल मुकाबला आई.ए.एस. टीम व कॉलेज शिक्षा टीम के मध्य खेला गया।फाइनल मुकाबले के प्रथम मैच में आई.ए.एस. टीम के नवीन महाजन एवं शरद मेहरा ने आर.ए.एस. टीम के अरुण चौधरी एवं जयकिशन त्रिपाठी को 9-5 के अंतर से जीत दर्ज की। वहीं, दूसरे मैच में आई.ए.एस. टीम के नवीन महाजन एवं रवि जैन ने कॉलेज शिक्षा टीम के नवदीप बैंस एवं कन्हैयालाल गुर्जर को 9-2 से हराकर खिताबी मुकाबला 2-0 से जीता।प्रतियोगिता के विजेताओं-उपविजेताओं को नवीन महाजन, अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक राजस्थान राज्य भण्डार व्यवस्था निगम जयपुर, आरुषि अजय मलिक

संभागीय आयुक्त जयपुर तथा प्रकाश राजपुरोहित जिला कलक्टर जयपुर द्वारा पुरस्कार वितरण किया गया।प्रतियोगिता के आयोजन को नवीन महाजन द्वारा विभिन्न सेवा के अधिकारियों के आपसी समन्वय हेतु बेहतरीन मंच बताया तथा इस प्रकार की प्रतियोगिताओं के समय-समय पर आयोजन करवाये जाने की आवश्यकता बताया। आरूषि अजय मलिक ने महिला अधिकारियों से प्रतियोगिता में अधिकाधिक भाग लेने का आ''ान किया।बैडमिंटन प्रतियोगिता में पुरुष वर्ग के फाइनल में राजस्थान सचिवालय सेवा की टीम के मनमोहन टांक, नमन सुशील माथुर एवं आशीष ने राजस्थान चिकित्सा एवं चिकित्सा शिक्षा सेवा को 2-0 से पराजित कर खिताब अपने नाम किया।

वहीं, महिला वर्ग बैडमिंटन प्रतियोगिता के फाइनल में राजस्थान लेखा सेवा की टीम की महिमा, सुनीता सैनी, चित्रा जोशी व कृतिका यादव ने राजस्थान चिकित्सा एवं चिकित्सा शिक्षा सेवा को 2-1 से पराजित कर खिताब अपने नाम किया।गौरतलब है कि कार्मिक विभाग के तत्वाधान में जिला प्रशासन द्वारा 24 फरवरी से 26 फरवरी तक आयोजित प्रतियोगिता में भारतीय प्रशासनिक सेवा, पुलिस सेवा, वन सेवा, राजस्थान प्रशासनिक सेवा, पुलिस सेवा, वन सेवा, सचिवालय सेवा, चिकित्सा सेवा, जन स्वास्थ्य अभियांत्रिकी सेवा, राज्य बीमा सेवा, कॉलेज शिक्षा सेवा, लेखा सेवा, वाणिज्यिक कर सेवा आदि सेवाओं की पुरुष एवं महिला वर्ग की कुल 21 टीमों ने भाग लिया था।

मशहूर गजल गायक कलाकार पंकज उधास हुए शांत , संगीत और साहित्य प्रेमियों में छायी दुख की लहर

चमकता राजस्थान। नई दिल्ली (एजेंसी)। मशहूर गजल गायक पंकज उधास का सोमवार को 72 साल की उम्र में निधन हो गया। वे लम्बे समय से बीमार चल रहे थे। उन्हें भारत सरकार की पद्मश्री सम्मान भी मिल चुका है। उनके निधन की जानकारी उनकी बेटी नायाब ने सोशल मीडिया पर दी है। पंकज उधास का जन्म 17 मई 1951 को गुजरात के जेतपुर में हुआ था। उनका परिवार राजकोट के पास चरखाड़ी नाम के एक कस्बे का रहने वाला था। उनके दादाजमींदार थे और भावनगर राज्य के दीवान भी थे। उनके पिता केशुभाई उधास सरकारी कर्मचारी थे, उन्हें इसराज बजाने का बहुत शौक था। वहीं उनकी मां जीतूबेन उधास को गानों का बहुत शौक था। यही वजह थी पंकज उधास समेत उनके दोनों भाइयों का रुझान संगीत की तरफ हमेशा से रहा। वहां पर कोर्स पूरा करने के बाद पंकज कई बड़े स्टेज शो पर परफॉर्मेंस करते थे। वो अपने भाईयों के जैसे ही बॉलीवुड में जगह बनाने चाहते थे। इसके लिए उन्हें 4 साल का लंबा संघर्ष किया।

- **'चिट्ठी आई है' गाने को सुन रो पड़े थे राज कपूर**

राजेंद्र कुमार और राज कपूर बहुत अच्छे दोस्त थे। एक दिन उन्होंने राज कपूर को अपने घर डिनर पर बुलाया। डिनर करने के बाद उन्होंने पंकज उधास की आवाज में राज कपूर को चिट्ठी आई है, गजल सुनाया, तो वो रो पड़े। उन्होंने कहा कि इस गजल से पंकज को बहुत पॉपुलैरिटी मिलेगी और उनसे बेहतर ये गजल कोई दूसरा नहीं गा सकता।

ग्राम पंचायत गालदकलां में तीन दिवसीय एदलकी मेले का आयोजन हुआ

चमकता राजस्थान

जयपुर (खलील कुरैशी) गालदकला में तीन दिवसीय एदलकी मेले का भव्य आयोजन हुआ जिसमें मुख्य अतिथि के.सी घुमरिया सेवानिवृत्त आई.आर.एस राष्ट्रीय कोर्डिनेटर अखिल भारतीय आदिवासी कांग्रेस एवं प्रदेश अध्यक्ष अखिल भारतीय आदिवासी विकास परिषद राजस्थान रहें और विशिष्ट अतिथि आरडी जिला परिषद सदस्य सवाई माधोपुर,किसान नेता रामअवतार मीना कांग्रेस नेता प्रकाश मीना पूर्व छात्रसंघ अध्यक्ष पवन खरेडा, मासूम अली जिला उपाध्यक्ष सेवादल कांग्रेस ,सुरेंद्र रैगर जिला सचिव सेवादल सूरज मल मीना महामंत्री, मुनिराज गालद मुकेश नेता गायक राजू

गायक अन्य लोग मौजूद रहे ।इस दौरान अपने संबोधन में मुख्य अतिथि के.सी घुमरिया ने कहा की कहा कि इस तरह के आयोजन से सद्भाव व भाई-चारा बढ़ता है। सुड्डा, एवं अन्य सुड्डा गानों से राजस्थानी लोक संस्कृति के प्रतिक है, जो हमें हमारी सभ्यता से जोड़े रखते हैं। मुझे इस बात की बेहद खुशी है कि सुड्डा जैसे कार्यक्रमों का व्यापक स्तर पर जगह-जगह गांव एवं कस्बों में भव्य आयोजन ग्रामीणों द्वारा किया जाता है, जिससे धार्मिक भावना के साथ- साथ आपसी भाईचारा भी बढ़ रहा है। जो हमारी संस्कृति

- **मेले और धार्मिक, सामाजिक आयोजनों से परस्पर आपसी बंधुत्व को बढ़ावा मिलता है के. सी.घुमरिया**

का द्योतक है समाज के युवाओं को शिक्षा और रोजगार कैसे मिले इस पर लोगो को जागरूक करने की आवश्यकता है समाज में महिलाओं को बराबरी का दर्जा दिया जाये दहेज के प्रति बढ़ती प्रवृत्ति पर नियंत्रण कैसे किया अभियान चलाया जायेबुजुर्गों के प्रति युवाओं में जिम्मेदारियों का निर्वाह एवं जागरूकता बढ़े ।कन्या भ्रूण हत्या और बालिका अशिक्षा दूर करने पर जोर दिया जाये।

लोकसभा अध्यक्ष बिरला ने बूंदी में सुनी जनसमस्याएं, जानें इस दौरान क्या-क्या हुआ

चमकता राजस्थान। कोटा। लोक सभा अध्यक्ष ओम बिरला ने सोमवार को बूंदी के सर्किट हाउस में जिलेवासियों की परिवेदनाएं सुनीं। इस जनसुनवाई में विभिन्न विभागों के जिला स्तरीय अधिकारी मौजूद रहे।लोकसभा अध्यक्ष बिरला ने जन सुनवाई के दौरान परिवादियों की समस्याओं की विस्तार से जानकारी ली और मौके पर ही मौजूद अधिकारियों को सकारात्मक भाव से समाधान करने के निर्देश दिए। इस दौरान उन्होंने कहा कि आमजन की समस्याओं का अधिकारी संवेदनशीलता के साथ समाधान सुनिश्चित करें। उन्होंने निर्देश दिए कि इसमें किसी तरह की कौताही नहीं बरती जाए। साथ ही अधिकारी प्राप्त परिवेदनाओं को गम्भीरता से लेते हुए उनका समाधान कर परिवादियों को राहत देना सुनिश्चित करें।जन सुनवाई के दौरान प्रधानमंत्री आवास राशि भुगतान करवाने, जलापूर्ति, विद्युत कनेक्शन, सीमा ज्ञान, अतिक्रमण हटाने, राशि स्वीकृत करवाने, पट्टा दिलाने, वेतन भुगतान, सामाजिक सुरक्षा पेंशन, रास्ते, राजस्व रिकॉर्ड में नाम शुद्धिकरण, सड़क निर्माण, खाद्य सुरक्षा योजना का लाभ दिलाने सम्बन्धी समस्याएं लोकसभा अध्यक्ष को बताई गईं। कई समस्याओं का मौके पर ही समाधान कर दिया गया। अन्य के सम्बन्ध में सम्बन्धित विभागीय अधिकारियों को शीघ्र समाधान कर राहत देने के निर्देश दिए। जन सुनवाई में पुलिस अधीक्षक हनुमान प्रसाद मीणा, लोकसभा अध्यक्ष के ओएसडी राजीव दत्ता, अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक प्रवीण जैन, तालेड़ा प्रधान राजेश रायपुरिया, उपखंड अधिकारी बूंदी अनुराग हरित, बूंदी उपअधीक्षक नरेन्द्र पारीक, उप अधीक्षक सज्जन सिंह, भाजपा नेता सुरेश अग्रवाल, छीतर लाल राणा, रामेश्वर मीणा, महावीर मोदी आदि के अलावा ग्रामीण भी मौजूद रहे।

गोवा, लखनऊ और गुवाहाटी से भी अधिक फ्लाइट्स का रहा मूवमेंट

देशभर में टॉप-10 में शमिल हुआ जयपुर एयरपोर्ट

चमकता राजस्थान

जयपुर। (खलील कुरैशी) जयपुर इंटरनेशनल एयरपोर्ट फ्लाइट संचालन के लिहाज से देश के सबसे व्यस्त एयरपोर्ट की सूची में 10वें स्थान पर पहुंच गया है। फ्लाइट संचालन के मामले में जयपुर ने पहली बार गोवा एयरपोर्ट को भी छोड़ दिया है। दरअसल, एयरपोर्ट पर यात्रीभार और फ्लाइट संचालन दोनों में ही अपेक्षाकृत रूप से अच्छी बढ़ोतरी देखने को मिल रही है। देश के सबसे व्यस्त एयरपोर्ट की सूची में फ्लाइट संचालन के लिहाज से केन्द्रीय नागरिक उड्डयन मंत्रालय की ओर से जारी आंकड़ों में जनवरी 2024 में जयपुर एयरपोर्ट देश में 10वें स्थान पर रहा है। फ्लाइट संचालन में जयपुर एयरपोर्ट ना सि-

र्फ लखनऊ और गुवाहाटी जैसे समकक्ष एयरपोर्ट से बल्कि पहली बार गोवा के दाबोलिम इंटरनेशनल एयरपोर्ट से भी आगे रहा है।इसकी एक बड़ी वजह ये भी है कि वहां मोपा में गोवा नॉर्थ एयरपोर्ट शुरू हो जाने से यात्रीभार बंट गया है। जयपुर एयरपोर्ट से जनवरी माह में औसतन रोज 64 फ्लाइट्स का संचालन हुआ है। वहीं, रोज औसतन 17 हजार यात्रियों ने हवाई यात्रा की है। जयपुर एयरपोर्ट से जनवरी में यात्रीभार 5 लाख से अधिक रहा है, लेकिन यह दिसंबर 2023 की तुलना में कम है। दिसंबर 2023 में जहां जयपुर एयरपोर्ट से 5.19 लाख यात्रियों ने यात्रा की थी। जबकि जनवरी में यात्रियों की संख्या करीब 5.5 लाख रही है। यानी करीब 14 हजार यात्रियों की संख्या घटी है।

- **किस एयरपोर्ट से कितने विमानों का आवागमन**

» दिल्ली आईजीआई इंटरनेशनल एयरपोर्ट- 36362, मुंबई सीएसएमआई एयरपोर्ट- 28275, बैंगलुरु एयरपोर्ट 21189, हैदराबाद एयरपोर्ट- 15308, चेन्नई एयरपोर्ट 12436, कोलकाता एयरपोर्ट- 11501, अहमदाबाद एयरपोर्ट 7926, कोचीन एयरपोर्ट 5836, पुणे एयरपोर्ट- 5302, जयपुर एयरपोर्ट- 3997, गोवा एयरपोर्ट- 3726, गुवाहाटी एयरपोर्ट- 3659, लखनऊ एयरपोर्ट- 3626 विमानों का आवागमन हुआ।जनवरी, 2024 में कितना रहा यात्रीभारएयरपोर्ट से 50 हजार 4610 यात्रियों ने यात्रा की। जयपुर यात्रीभार के लिहाज से जयपुर एयरपोर्ट 12वें स्थान पर रहा।लखनऊ से कम और गुवाहाटी से अधिक यात्रीभार रहा।जयपुर एयरपोर्ट पर गोवा से भी कम यात्रीभार रहा। जनवरी में जयपुर से मुंबई, दिल्ली, और बैंगलुरु के लिए सबसे अधिक यात्री रहे।

केशवरायपाटन-कापरेन व रामगंजमंडी को भी दी सौगातें

बूंदी रेलवे स्टेशन पर हुए कार्यक्रम में शामिल हुए

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने बूंदी रेलवे स्टेशन के पुनर्विकास कार्य का शिलान्यास किया

लोक सभा अध्यक्ष ओम बिरला, कहा-कोटा-बूंदी में हर रेलवे स्टेशन पर यात्री सुविधाओं का विस्तार हो रहा

चमकता राजस्थान

बूंदी। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने सोमवार को वर्चुअल माध्यम से बूंदी रेलवे स्टेशन के पुनर्विकास कार्य और केशवरायपाटन व कापरेन के बीच अंडरपास का शिलान्यास तथा रामगंजमंडी में अंडरपास का लोकार्पण किया। कार्यक्रम के दौरान लोकसभा अध्यक्ष ओम बिरला भी बूंदी स्टेशन पर मौजूद रहे।शिलान्यास एवं लोकार्पण से पूर्व कार्यक्रम को सम्बोधित करते हुए लोकसभा अध्यक्ष बिरला ने कोटा-बूंदी में रेल सुविधाओं के विस्तार तथा आमजन के आवागमन को सुविधाजनक बनाने की पहल करने के लिए प्रधानमंत्री मोदी का आभार व्यक्त किया। उन्होंने कहा कि मोदी के प्रयासों से देश में रेल नेटवर्क के विस्तार के साथ वर्ल्ड क्लास यात्री सुविधाओं की उपलब्धता सुनिश्चित हो रही है।बिरला कहा कि आज कोटा और बूंदी के प्रत्येक रेलवे स्टेशन पर यात्री सुविधाओं का विस्तार हो रहा है। कोटा, बूंदी, डकनिया तलावा, रामगंजमंडी जैसे बड़े स्टेशनों का पुनर्विकास हो रहा है तो केशवरायपाटन, कापरेन, लाखेरी, मोड़क, दरा जैसे छोटे स्टेशनों पर भी 1 से 10 करोड़ रुपए के कार्य चल रहे हैं। छोटे-छोटे स्टेशनों पर एस्केलेटर, लिफ्ट जैसी सुविधाएं उपलब्ध हो रही हैं। सर्कुलेटिंग एरिया को खुला-खुला और सुविधाजनक बनाया जा रहा है। प्लेटफार्म पर गाड़ी का इंतजार कर रहे यात्रियों के लिए मनोरंजन और भोजन के लिए भी विकल्प उपलब्ध हो रहे हैं।

बूंदी स्टेशन पर दिखेगी संस्कृति-विरासत की झलक

» लोकसभा अध्यक्ष ने कहा–बूंदी रेलवे स्टेशन का 8 करोड़ रुपए की लागत से पुनर्विकास होगा। इसमें बूंदी की ऐतिहासिक विरासत और गौरवशाली इतिहास को समायोजित किया जाएगा। बूंदी रेलवे स्टेशन में प्रवेश करते ही यहां की संस्कृति और परम्पराओं के दर्शन होंगे। स्टेशन के सौंदर्यीकरण और यात्री सुविधाओं के विस्तार से क्षेत्र में पर्यटन को भी प्रोत्साहन मिलेगा। केशवरायपाटन व कापरेन तथा रामगंजमंडी में अंडरपास से आमजन का आवागमन सुलभ होगा।

50 करोड़ से कोटा-अजमेर लाइन का होगा सर्वे, बूंदी को मिलेगा फायदा

» लोकसभा अध्यक्ष बिरला ने कहा कि कोटा–अजमेर के बीच नई रेल लाइन बिछाने के लिए मजबूती से काम हो रहा है। इस लाइन के सर्वे के लिए 50 करोड़ रुपए आवंटित हुए हैं। यह लाइन बनने के बाद सबसे अधिक लाभ बूंदी को मिलेगा और यहां कई और गाड़ियों का ठहराव होगा। प्रधनमंत्री मोदी के नेतृत्व में नई रेल लाइन तो बिछाई ही जा रही है, जिन योजनाओं की बरसों पहले घोषणा कर भुला दिया गया था, उन पर भी काम किया जा रहा है।

अगले माह मिल सकती है स्विमिंग पूल की सौगात

» कार्यक्रम के दौरान बिरला ने बूंदी जिले में चल रहे विकास कार्य भी गिनवाए। बिरला ने कहा कि 146 करोड़ की लागत से मेडिकल कॉलेज और 85 करोड़ की लागत से 250 बेड का अस्पताल बन रहा है। 23 करोड़ की लागत से केन्द्रीय विद्यालय का कार्य भी किया जा रहा है। 70 करोड़ की लागत से केशवरायपाटन मंदिर के पास जीर्णोद्धार का कार्य प्रस्तावित है। खेल संकुल का विकास 20 करोड़ की लागत से हो रहा है। इसमें 7 करोड़ की लागत से बने सिंथेटिक ट्रेक का लोकार्पण हो चुका है। 5 करोड़ की लागत से बन रहे अन्तरराष्ट्रीय स्तर के स्वीमिंग पूल का काम 99 प्रतिशत पूरा हो चुका है। इस कार्यक्रम में पुलिस अधीक्षक हनुमान प्रसाद मीणा, लोकसभा अध्यक्ष के ओएसडी राजीव दत्ता, तालेड़ा प्रधान राजेश रायपुरिया,अतिरिक्त जिला कलक्टर सीलिंग नवरत्न कोली, अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक प्रवीण जैन, उपखंड अधिकारी बूंदी अनुराग हरित, बूंदी उपअधीक्षक नरेन्द्र पारीक, भाजपा नेता सुरेश अग्रवाल, छीतर लाल राणा, रामेश्वर मीणा, नगर परिषद के पूर्व सभापति महावीर मोदी आदि भी मौजूद रहे।

● रेल-रोड-एयर कनेक्टिविटी में अग्रणी होंगे कोटा-बूंदी

» बिरला ने कहा कि आने वाले समय में कोटा–बूंदी क्षेत्र रेल, रोड और एयर कनेक्टिविटी में अग्रणी होंगे। इससे उद्योग, व्यापार और पर्यटन के क्षेत्र में नई सम्भावनाएं विकसित होंगी और रोजगार को भी बल मिलेगा। यह कार्य अतिशीघ्र हो इसके लिए प्रतिबद्धता से कार्य किया जा रहा है।

कार्यक्रम को बूंदी विधायक हरिमोहन शर्मा, पूर्व विधायक अशोक डोगरा व मंडल रेल प्रबंधक मनीष तिवारी ने भी सम्बोधित किया। इस मौके पर बिरला ने 'विकसित भारत' निबंध प्रतियोगिता में उत्कृष्ट प्रदर्शन करने वाले विद्यार्थियों को भी सम्मानित किया।

गुजरात के साबरकांठा में तीन दिवसीय चुनावी दौरे पर कैलाश चौधरी, बिरसा मुंडा की मूर्ति का किया अनावरण

● केंद्रीय कृषि राज्य मंत्री कैलाश चौधरी तीन दिवसीय गुजरात के साबरकांठा दौरे

चमकता राजस्थान। साबरकांठा (गुजरात)आगामी लोकसभा चुनाव की रणनीति और चुनाव प्रबंधन को लेकर केंद्रीय कृषि एवं किसान कल्याण राज्य मंत्री कैलाश चौधरी गुजरात राज्य के दौरे पर है। केंद्रीय कृषि राज्य मंत्री कैलाश चौधरी ने सोमवार को साबरकांठा लोकसभा क्षेत्र में अरवल्ली जिले की खेड़ब्रह्मा और हिम्मत नगर विधानसभा में आयोजित विभिन्न सामाजिक एवं राजनीतिक कार्यक्रमों में भाग लिया।केंद्रीय कृषि राज्य मंत्री कैलाश चौधरी ने ₹अबकी बार 400 पार, फिर एक बार मोदी सरकार₹ के भाजपा के संकल्प की सिद्धि को लेकर गुजरात की साबरकांठा लोकसभा के जिला हिम्मतनगर स्थित भाजपा कार्यालय में स्थानीय जनप्रतिनिधियों, भाजपा पदाधिकारियों और कार्यकर्ताओं के साथ बैठक में संवाद के माध्यम से आगामी लोकसभा चुनाव को लेकर विभिन्न संगठनात्मक विषयों पर विस्तृत चर्चा की। कैलाश चौधरी ने कहा कि भारतीय जनता पार्टी परिवार का प्रत्येक सदस्य पूरे समर्पण भाव से एक बार फिर प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में भाजपा की प्रचंड जीत के लिए जुटा हुआ है।

बिरसा मुंडा का जीवन पराक्रम और शौर्य का प्रतीक : केंद्रीय कृषि राज्य मंत्री कैलाश चौधरी ने गुजरात प्रवास के दौरान साबरकांठा की खेड़ब्रह्म विधानसभा के लिमबड़िया में भगवान बिरसा मुंडा की मूर्ति अनावरण कार्यक्रम में भाग लिया। मूर्ति अनावरण समारोह को संबोधित करते हुए केंद्रीय कृषि राज्य मंत्री कैलाश चौधरी ने कहा कि भगवान बिरसा मुंडा का जीवन शौर्य और पराक्रम का प्रतीक है। अपने कार्य से और अपनी सोच से उन्होंने समाज को एक नई दिशा दी। मैं ऐसी महान शख्सियत को वंदन करता हूँ।कैलाश चौधरी ने कहा कि भगवान बिरसा मुंडा के भारत की आजादी और आदिवासी समाज की जागृति में बड़े योगदान को स्वीकार करते हुए यशस्वी प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी जी के नेतृत्व में केंद्रीय सरकार ने 15 नवंबर को ₹जनजातीय गौरव दिवस₹ के रूप में घोषित किया गया है।

डबल इंजन की सरकार ने राजस्थान के पूर्वी जिलों को ईआरसीपी की दी सौगात : भजन लाल शर्मा

चमकता राजस्थान

गंगापुर सिटी। पूर्वी राजस्थान के जन और जमीन की प्यास बुझाने वाले एकीकृत ईआरसीपी परियोजना के एमओयू के बाद मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा आमजन से रूबरू होने उनके बीच पहुंचे ।प्रदेश के मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा रविवार को सवाई माधोपुर जिले के महात्मा गांधी राजकीय विद्यालय मलारना चौड़ खेल मैदान पर आयोजित पीकेसी-ईआरसीपी एकीकृत मुख्यमंत्री जल स्वावलम्बन आभार सभा स्थल पर आमजन एवं लाभार्थियों को सम्बोधित करते हुए कहा कि वे त्रिनेत्र गणेश भगवान की धरा सवाई माधोपुर को नमन करते है गणेश जी की कृपा से ही इस डबल इंजन की सरकार ने राजस्थान के पूर्वी जिलों को ईआरसीपी की सौगात दी है।

उन्होंने कहा कि उनकी सरकार भक्ति, शक्ति और शांति की भूमि राजस्थान के चहुंमुखी विकास के लिए कार्य कर रही है। यह देश के प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी की गा-रंटी है। उन्होंने कहा कि वे सम्मान यात्रा में जनता का आभार व्यक्त करने आए है। उन्होंने कहा कि उनकी सरकार ने जनता से जो वादे किये थे उन्हें पूरा करने का शुभारंभ कर दिया है। इस दौरान जन स्वास्थ्य अभियांत्रिकी एवं भूजल मंत्री कन्हैयालाल चौधरी ने भी आमजन एवं लाभार्थियों को सम्बोधित किया टोंक- सवाई माधोपुर सांसद सुखबीर सिंह जौनापुरिया ने कहा कि जिस प्रकार पंजाब और उत्तर प्रदेश में एक-एक जमीन पर फसल उगती है उसी प्रकार पूर्वी जिलो की एक-एक इंच भूमि पर तीन-तीन फसल लहराएंगी । खण्डार विधायक जितेन्द्र गोठवाल ने कहा कि जो वादे उनकी सरकार ने किए थे उन्हें धरातल पर लाने का कार्य प्रारम्भ हो चुका है।

ये गणमान्य रहे मौजूद

» कृषि उद्यानिकी एवं ग्रामीण विकास विभाग मंत्री डॉ. किरोड़ी लाल मीना, चित्तौडगढ़ सांसद सीपी जोशी, जिला कलक्टर डॉ. खुशाल यादव, जिला पुलिस अधीक्षक ममता गुप्ता, बौंली प्रधान कृष्णा पोसवाल, खण्डार प्रधान नरेन्द्र चौधरी भाजपा जिला अध्यक्ष सुशील दीक्षित सहित अन्य जन प्रतिनिधि उपस्थित रहे।

संयुक्त किसान मोर्चा का बड़ा ऐलान, कल 'डब्लूटीओ क्विट डे' मनाएंगे किसान

नई दिल्ली/एजेंसी। पंजाब-हरियाणा के शंभू बॉर्डर पर किसानों का आंदोलन जारी है। इसी बीच संयुक्त किसान मोर्चा ने 26 फरवरी यानी कल 'डब्लूटीओ क्विट डे' मानने का ऐलान किया है। किसान संगठन ने कहा कि खेती को डब्लूटीओ से बाहर रखें। संयुक्त किसान मोर्चा ने केंद्र सरकार से मांग की है कि 26 से 29 फरवरी तक अबू धाबी में होने वाले विश्व व्यापार संगठन के 13वें मंत्रिस्तरीय सम्मेलन में खेती को डब्ल्यूटीओ से बाहर रखने के लिए विकसित देशों पर दबाव डाला जाए। भारत की खाद्य सुरक्षा और मूल्य समर्थन कार्यक्रम डब्ल्यूटीओ में बार-बार विवादों का विषय रहा है। दरअसल, प्रमुख कृषि निर्यातक देशों ने 2034 के आखिर तक खेती को समर्थन देने के लिए डब्लूटीओ सदस्यों के अधिकारों के वैश्विक स्तर पर 50त्न कटौती का प्रस्ताव दिया है।

एसकेएम ने कहा कि भारत सरकार को इन मुद्दों के स्थायी समाधान के लिए सामूहिक रूप से लडऩे के लिए कम विकसित देशों से समर्थन जुटाना चाहिए, ताकि विकासशील देशों को न केवल अपने मौजूदा कार्यक्रमों को बनाए रखने की अनुमति दी जाए, बल्कि उन्हें बड़े पैमाने पर अपने किसानों और लोगों का समर्थन करने के लिए उन्हें मजबूत करने की अनुमति दी जाए। एसकेएम ने कहा कि देशभर के किसान 26 फरवरी को 'डब्ल्यूटीओ क्विट डे' के रूप में मनाएंगे और दोपहर 12 बजे से शाम 4 बजे तक नेशनल और स्टेट हाईवे पर यातायात में बाधा डाले बिना ट्रैक्टर खड़े करेंगे। किसान नेता सरवन सिंह पंधेर ने कहा कि दिल्ली चलो मार्च में भाग ले रहे किसान अपनी मांगें पूरी होने तक आंदोलन खत्म नहीं करेंगे। उन्होंने संकेत दिया कि लोकसभा चुनावों के लिए आदर्श आचार संहिता लागू हो जाने के बाद भी किसानों का आंदोलन जारी रहेगा। हजारों किसान हरियाणा से लगी पंजाब की खनौरी और शंभू सीमाओं पर अपनी ट्रैक्टर-ट्रॉलियों और ट्रकों के साथ डेरा डाले हुए हैं।

एसयूवी और लॉरी की जबरदस्त भिड़ंत, पांच लोगों की मौत

कडपा,/आंध्रप्रदेश/एजेंसी। आंध्रप्रदेश के कडपा में रविवार को एक एसयूवी और लॉरी की टक्कर में पांच लोगों की मौत हो गई और तीन गंभीर रूप से घायल हो गए। क्षेत्र निरीक्षक एन शेखर ने कहा कि अन्नामय्या जिले के मदनपल्ले मंडल के बारलापल्ले गांव में एसयूवी दो पैदल यात्रियों को टक्कर मारने के बाद एक लॉरी से टकरा गई। एसयूवी में सवार पांच लोग कडपा की ओर जा रहे थे। चालक ने वाहन पर नियंत्रण खो दिया। एसयूवी में सवार तीन लोगों की तुरंत मौत हो गई। मृतकों की पहचान तिलक, विक्रम और श्रीनु के रूप में हुई। उन्होंने बताया कि दुर्घटना में दो पैदल यात्री चंद्रा (50) और सुब्रमण्यम (62) की भी मौके पर ही मौत हो गई। मृतक डेयरी किसान थे। तीनों घायलों को मदनपल्ले के जीजीएच में भर्ती कराया गया जहां उनकी हालत बेहद गंभीर बताई जा रही है।

निजी विद्यालय संचालक हुए लामबंद

चमकता राजस्थान

धौलपुर (रामदास तरुण) बाड़ी निदेशक शिक्षा विभाग प्रारंम्भिक के तुगलकी आदेश एवं समय पर आरटीई की राशि नही मिलने के कारण आज बाड़ी में पधारे मुख्यमंत्री को ज्ञापन देकर अपनी समस्याओं से अवगत कराया। इससे पूर्व आज स्थानीय विद्यालय बी एस एजुकेशनल एकेडमी में निजी विद्यालय संघठन की मीटिंग का आयोजन हुआ! जिसमें निदेशक शिक्षा विभाग के तुगलकी आदेश का उपस्थित संचालकों ने एक स्वर से विरोध किया तथा निर्णय लिया संघठन के बीरेंद्र दीक्षित ने बताया कि जब प्रतिवर्ष आरटीई के समय स्कूल्स का निरीक्षण होता है फिर निदेशक ने आदेश किस मंशा से दिया है सरकार की 100 दिन की कार्य योजना में निजी विद्यालयों के आकस्मिक निरीक्षण का कोई जिक्र तक नहीं है इसका सीधा सा अर्थ है कि नवनिर्वाचित सरकार निदेशक शिक्षा विभाग के माध्यम से निजी विद्यालयों के संचालको को परेशान करना चाहती है वो भी तब जब बोर्ड परीक्षाएं निकट हैं संगठन के अध्यक्ष केशव शर्मा ने कहा कि अगर कोई सरकारी अधिकारी निरीक्षण हेतु विद्यालय में उपस्थित होता है तो कोई भी संचालक निरीक्षण नहीं कराएगा संघठन के पूर्व अध्यक्ष राकेश दीक्षित ने बताया कि आरटीई के तहत विद्यालयों को 2022-23 की किस्तें अभी तक नहीं मिल पाई हैं इस ओर सरकार का कोई ध्यान नही है सबसे पहले 2022-23 तथा 23-24 की दोनों किश्तें स्कूल संचालको को दिलाई जावें! संघठन के महामंत्री शैलेन्द्र सिंह जाट ने कहा कि अगर भविष्य में समय पर आरटीई का भुगतान नही होता है तो कोई भी संचालक आरटीई के तहत निः-शुल्क प्रवेश नही दे!इस पर उपस्थित सभी संचालकों ने अपनी सहमति जताई इसी कड़ी में संघठन के उपाध्यक्ष सरनाम सिंह परमार ने कहा कि अगर कोई अधिकारी निः-शुल्क प्रवेश के लिए दबाब डाले तो उससे विनम्रता पूर्वक कहा जाए हमें सरकार पुनर्भरण राशि नही देती है!

समस्याओं से अवगत कराने के लिए ज्ञापन दिया है! जिसका उपस्थित सभी संचालको ने स्वीकृति प्रदान की गई मीटिंग व ज्ञापन देने वालों में बीरेंद्र दीक्षित, केशव शर्मा राकेश दीक्षित शैलेन्द्र जाट योगेश कुमार देवेंद्र मुदगल सरनाम सिंह जितेंद्र सिंह सौरभ सिंह परमार रामेश्वर शर्मा रवि शर्मा अरुण शुक्ला जुवैर खान जगन्नाथ कोली मुकेश कटारा राजेन्द्र कुशवाह लक्ष्मण सिंह प्रदीप कुमार मोहन लाल राजकुमार अवस्थी सुनील गर्ग सुनील मित्तल लक्ष्मी नारायण बंसल मनोज पाराशर महेश पाराशर आदि संचालक उपस्थित थे।

महाशिवरात्रि

सद्गुरू जग्गी वासुदेव

महाशिवरात्रि, शिव की महान रात्रि, यह भारत के आध्यात्मिक कैलेंडर का सबसे महत्वपूर्ण प्रसंग है। सद्गुरु बता रहे हैं कि रात्रि का इतना महत्व क्यों है और हम इसका भरपूर उपयोग कैसे कर सकते हैं।

ध्यान की अनेक सहस्राब्दियों के बाद, एक दिन वे पूरी तरह से स्थिर हो गए। वही दिन महाशिवरात्रि था

यौगिक परंपरा में शिव को एक देव के रूप में नहीं पूजा जाता, वे आदि गुरु माने जाते हैं जिन्होंने ज्ञान का शुभारंभ किया। ध्यान की अनेक सहस्राब्दियों के बाद, एक दिन वे पूरी तरह से स्थिर हो गए। वही दिन महाशिवरात्रि था

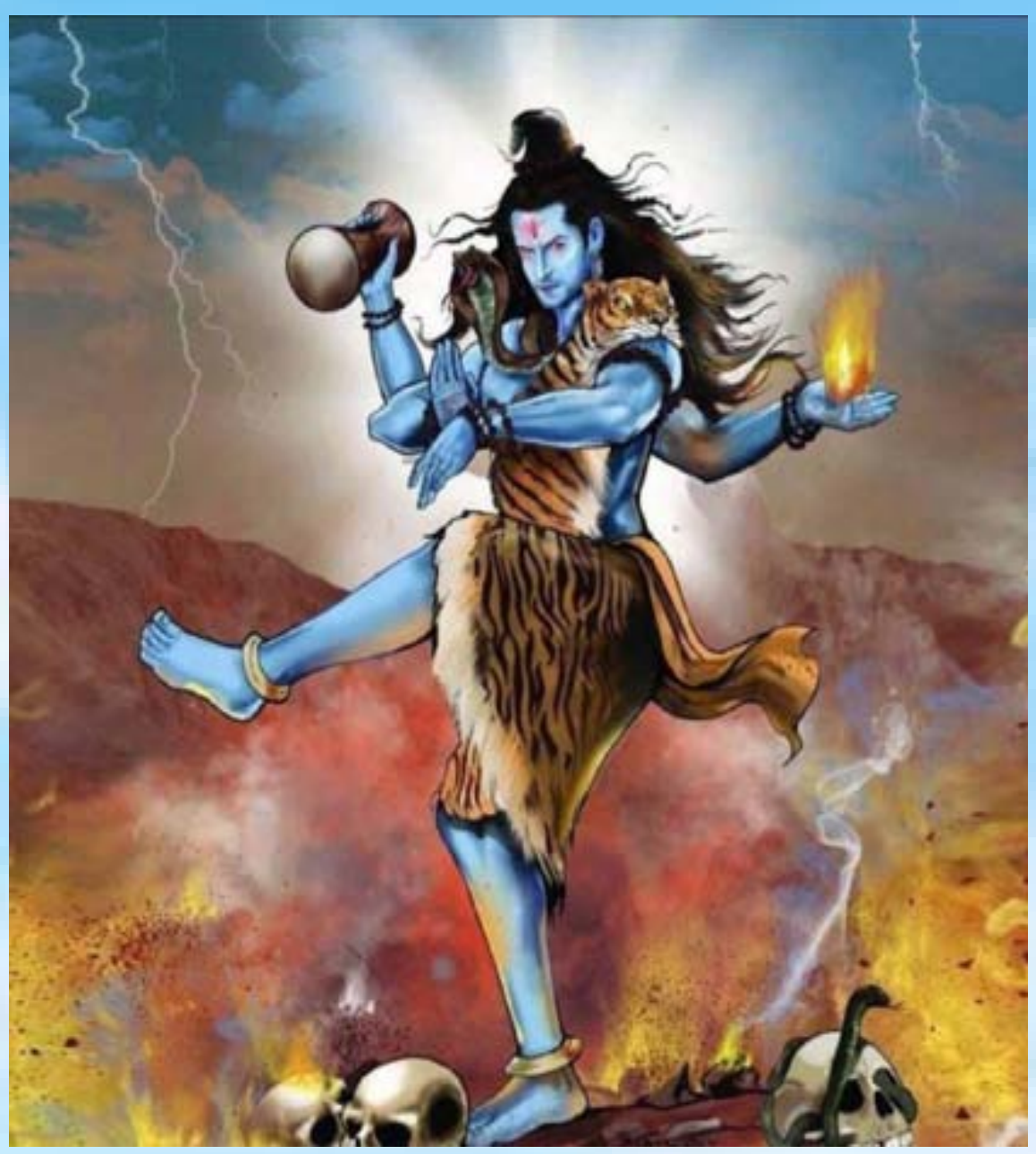

एक समय ऐसा भी था, जब भारतीय संस्कृति में, एक वर्ष में 365 दिन त्योहार हुआ करते थे। दूसरे शब्दों में, वे वर्ष में प्रतिदिन कोई न कोई समारोह मनाने का बहाना खोजा करते थे। ये 365 पर्व, जीवन के विभिन्न कारणों और उद्देश्यों से जुड़े थे। इन्हें विविध ऐतिहासिक घटनाओं, जीत या जीवन की निश्चित अवस्थाओं का समारोह मनाने के लिए मनाया जाता था जैसे फसल की बुआई और कटाई। हर परिस्थिति और अवस्था के लिए अलग-अलग पर्व और त्योहार थे, पर महाशिवरात्रि का अपना अलग ही महत्व है।

अमावस्या से एक दिन पूर्व, हर चंद्र माह के चौदहवें दिन को शिवरात्रि के नाम से जाना जाता है। एक कैलेंडर वर्ष में आने वाली सभी शिवरात्रियों के अलावा फरवरी-मार्च माह में महाशिवरात्रि मनाई जाती है। इन सभी में से महाशिवरात्रि का आध्यात्मिक महत्व सबसे ज्यादा है। इस रात, ग्रह का उत्तरी गोलार्द्ध कुछ ऐसी स्थिति में होता है कि मनुष्य में ऊर्जा सहज ही ऊपर की ओर बढ़ती है। इस दिन प्रकृति मनुष्य को उसके आध्यात्मिक शिखर तक जाने में सहायता करती है। इस अवसर का लाभ उठाने के लिए ही, इस परंपरा में हमने इस पूरी रात चलने वाले उत्सव की स्थापना की। इस उत्सव का एक सबसे मुख्य पहलू ये पक्का करना है कि प्राकृतिक ऊर्जाओं के प्रवाह को अपनी दिशा मिल सके। इसलिए आप अपनी रीढ़ की हड्डी सीधी रखते हुए जागते रहते हैं।

आध्यात्मिक पथ पर चलने वालों के लिए महाशिवरात्रि का पर्व बहुत महत्वपूर्ण है। पारिवारिक परिस्थितियों में जी रहे लोगों तथा महत्वाकांक्षियों के लिए भी यह उत्सव बहुत महत्व रखता है। जो लोग परिवार के बीच गृहस्थ हैं, वे महाशिवरात्रि को शिव के विवाह के उत्सव के रूप में मनाते हैं। सांसारिक महत्वाकांक्षाओं से घिरे लोगों को यह दिन इसलिए महत्वपूर्ण लगता है क्योंकि शिव ने अपने सभी शत्रुओं पर विजय पा ली थी। साधुओं के लिए यह दिन इसलिए महत्व रखता है क्योंकि वे इस दिन कैलाश पर्वत के साथ एकाकार हो गए थे। वे एक पर्वत की तरह बिल्कुल स्थिर हो गए थे।

यौगिक परंपरा में शिव को एक देव के रूप में नहीं पूजा जाता, वे आदि गुरु माने जाते हैं जिन्होंने ज्ञान का शुभारंभ किया। ध्यान की अनेक सहस्राब्दियों के बाद, एक दिन वे पूरी तरह से स्थिर हो गए। वही दिन महाशिवरात्रि था। उनके भीतर की प्रत्येक हलचल शांत हो गई और यही वजह है कि साधु इस रात को स्थिरता से भरी रात के रूप में देखते हैं।

अगर किंवदंतियों को छोड़ दें, तो यौगिक परंपरा के अनुसार इस दिन और रात का महत्व इसलिए भी है क्योंकि इस दिन आध्यात्मिक जिज्ञासु के सामने असीम संभावनाएँ प्रस्तुत होती हैं। आधुनिक विज्ञान अनेक चरणों से गुज़रते हुए, उस बिंदु पर आ गया है, जहाँ वे ये प्रमाणित कर रहे हैं झ कि आप जिसे जीवन के रूप में जानते हैं, जिसे आप पदार्थ और अस्तित्व के तौर पर जानते हैं, जिसे ब्रह्माण्ड और आकाशगंगाओं के रूप में जानते हैं, वह केवल एक ऊर्जा है जो अलग-अलग तरह से प्रकट हो रही है।

यह वैज्ञानिक तथ्य ही प्रत्येक योगी का भीतरी अनुभव होता है। योगी शब्द का अर्थ है, ऐसा व्यक्ति जिसने अस्तित्व की एकात्मकता का एहसास पा लिया हो। जब मैं 'योग' शब्द का प्रयोग करता हूँ तो मैं किसी एक अभ्यास या तंत्र की बात नहीं कर रहा। उस असीमित को जानने की हर प्रकार की तड़प, अस्तित्व के उस एकत्व को जानने की इच्छा झ योग है। महाशिवरात्रि की वह रात, उस अनुभव को पाने का अवसर भेंट करती है।

शिवरात्रि माह का सबसे अंधकारमय दिन है। हर माह शिवरात्रि को मनाने तथा एक विशेष दिन महाशिवरात्रि को मनाना लगभग ऐसा ही है, जैसेअंधकार का उत्सव मनाना। कोई भी तार्किक मन, अंधकार के स्थान पर प्रकाश को चुनेगा। परंतु शिव शब्द का शाब्दिक अर्थ है, 'जो नहीं है। जो है' वह अस्तित्व और सृजन है। और 'जो नहीं है, वह शिव है।' 'जो नहीं है' का अर्थ है कि जब आप अपनी आँखें खोलते हैं और अपने आसपास देखते हैं, अगर आपकी दृष्टि केवल छोटी वस्तुओं तक सीमित होगी तो आपको सृष्टि के अलग-अलग रूप दिखेंगे। अगर आपकी दृष्टि वाकई विशाल चीज़ों की खोज में होगी, तो आप विस्तृत शून्य को ही अस्तित्व की सबसे बड़ी उपस्थिति के रूप में देख सकेंगे। कुछ कण जिन्हें हम आकाशगंगा कहते हैं, वे आम तौर पर सभी का ध्यान आकर्षित करते हैं, पर ये विराट शून्य जिसने उन्हें थाम कर रखा है, सभी की नज़रों में नहीं आता। वह अथाह, असीम शून्य ही शिव कहलाता है। आधुनिक विज्ञान भी आज यही प्रमाणित कर रहा है, कि सब कुछ शून्य से ही उपजा है और उसी शून्य में विलीन हो जाता है। इसी संदर्भ में शिव, अथाह शून्य या खालीपन झ महादेव या देवों के देव कहलाते हैं।

उस असीमित को जानने की हर प्रकार की तड़प, अस्तित्व के उस एकत्व को जानने की इच्छा झ योग है। महाशिवरात्रि की वह रात, उस अनुभव को पाने का अवसर भेंट करती है।

हर धर्म, इस ग्रह की हर संस्कृति ने सदा उस दिव्य की सर्वव्यापी और चारों ओर होने की बात कही है। अगर हम इस ओर ध्यान दें तो चारों ओर जो इकलौती चीज हो सकती है, वह अंधकार, शून्य और खालीपन के सिवा कुछ नहीं है। आमतौर पर जब लोग कल्याण की कामना कर रहे होते हैं, तो हम दिव्य की व्याख्या प्रकाश के तौर पर करते हैं। जब लोग अपनी खुशहाली की कामना करना छोड़कर, जीवन से परे जा कर विसर्जित होने के बारे में सोचते हैं, अगर उनकी पूजा और साधना का लक्ष्य विसर्जन या मुक्ति होता है, तो हम सदा उस परम की व्याख्या अंधकार के रूप में करते हैं।

प्रकाश आपके मन की छोटी सी घटना है। प्रक ाश शाश्वत नहीं है, यह एक सीमित संभावना है क्योंकि यह घटता है और इसका अंत हो जाता है। हम जानते हैं कि इस ग्रह पर सूर्य ही प्रकाश का सबसे बड़ा स्त्रोत है। आप इसके प्रकाश को भी अपने हाथों की मदद से रोककर अंधकार की परछाईं बना सकते हैं।

पर अंधकार तो सर्वव्यापी है, और सभी कुछ इसमें समाया है। अपरिपक्व मन वाले लोग इस संसार में सदा अंधकार को शैतान मानते आए हैं। पर जब आप उस दिव्य को सर्वव्यापी कहते हैं, तो स्पष्ट है कि आप दिव्य को अंधकार कह रहे होते हैं,क्योंकि सिर्फ अंधकार ही चारो ओर फैला हुआ है। यह हर तरफ है। इसे किसी का सहयोग नहीं चाहिए। प्रकाश सदा किसी स्त्रोत से आता है जो अपने-आप को जला रहा है। इसका एक आदि और अंत है। यह एक सीमित स्त्रोत से आता है। अंधेरे का कोई स्त्रोत नहीं है। यह अपने-आप में एक स्त्रोत है। यह सर्वव्यापी और सर्वत्र है। तो जब हम शिव कहते हैं, तो हम अस्तित्व की उसी विस्तृत शून्यता की बात कर रहे हैं। इसी अथाह शून्य के बीच कहीं सारी सृष्टि जन्म लेती है। शून्यता की इसी गोद को हम शिव कहते हैं।

भारतीय संस्कृति में, सारी प्राचीन प्रार्थनाएँ आपको बचाने, आपकी रक्षा करने या जीवन में कुछ बेहतर करने के लिए नहीं थीं। सभी प्राचीन प्रार्थनाएँ सदा से यही रही हैं, 'हे प्रभु! मुझे नष्ट कर दो ताकि मैं भी आपकी तरह बन सकूँ।'

प्रकाश सदा किसी स्त्रोत से आता है जो अपने-आप को जला रहा है। अंधेरे का कोई स्त्रोत नहीं है। यह अपने-आप में एक स्त्रोत है।

तो जब हम शिवरात्रि की बात करते हैं, जो माह का सबसे अंधकारमय दिन है, तो यह एक अवसर है, जब व्यक्ति अपनी सीमितता को विलीन कर सकता है, सृष्टि के उस असीम स्त्रोत का अनुभव पा सकता है जो हर मनुष्य में बीज रूप में समाया है। महाशिवरात्रि एक अवसर और संभावना है। ये आपको, हर मनुष्य के भीतर छिपे उस अथाह शून्य के अनुभव के पास ले जाती है, जो सारे सृजन का स्त्रोत है।

एक ओर, शिव को संहारक कहा जाता। वहीं दूसरी ओर, वे सबसे करुणामयी भी माने जाते हैं। उन्हें ही सबसे बड़ा दानी भी कहा गया है। यौगिक गाथाओं में अनेक स्थानों पर शिव की करुणा का परिचय मिलता है। उनकी करुणा के तरीके, अपने-आप में अनूठे व असाधारण रहे हैं। तो महाशिवरात्रि कुछ ग्रहण करने की विशेष रात्रि भी है।

उप मुख्यमंत्री दिया कुमारी की उपस्थिति में महिला एवं बाल विकास विभाग तथा चिल्ड्रन इन्वेस्टमेंट फंड फाउंडेशन के बीच एमओयू हुआ साइन

महिलाओं , बच्चों और किशोरी बालिकाओं के समुचित विकास के लिए धरातल पर हो अच्छा काम : दिया कुमारी

चमकता राजस्थान

जयपुर। उप मुख्यमंत्री दिया कुमारी की उपस्थिति में महिला एवं बाल विकास विभाग के शासन सचिव श्री कृष्ण कुणाल तथा चिल्ड्रन इन्वेस्टमेंट फंड फाउंडेशन (सीआईएफएफ) (यू के) की एग्जीक्यूटिव डायरेक्टर, इंडिया, श्रीमती मंजुला सिंह के मध्य सोमवार को सचिवालय में एमओयू पर हस्ताक्षर किए गए। प्रदेश में सीआईएफएफ इस एमओयू के तहत अगले पांच साल में महिला एवं बाल विकास विभाग सहित विभिन्न विभागों के साथ मिलकर 350 करोड़ रूपये का बजट खर्च करेगा। जिसमें किशोरियों, महिलाओं और बच्चों के पोषण में सुधार के लिए कार्य किए जाएंगे।

उप मुख्यमंत्री ने कहा कि महिलाओं, बच्चों और किशोरी बालिकाओं के समुचित विकास के लिए राज्य सरकार प्रतिबद्धता से काम कर रही है। उन्होंने सीआईएफएफ के प्रतिनिधियों को कहा कि इसके लिए सीआईएफएफ

ब्लॉक स्तर पर अपनी टीम को और क्रियाशील करें ताकि धरातल पर अच्छा परिणाम दिखे। उन्होंने कहा कि सीआईएफएफ प्रदेशभर में पोषण गुणवत्ता पर निगरानी कर, अपना फीड बैक भी दे ताकि बेहतर सुधार किए जा सके। इसके साथ उन्होंने सीआईएफएफ प्रतिनिधियों से कहा कि वे पोषाहार की रेसिपी में किसी प्रकार की बदलाव की आवशयकता हो तो वह भी फील्ड में फीडबैक लेकर अवगत करवाए।

शासन सचिव ने बताया कि इस एमओयू के तहत सीआईएफएफ महिला एवं बाल विकास के साथ मिलकर किशोरियों, महिलाओं और बच्चों के पोषण में सुधार के लिए कार्यक्रमों को विकसित और सक्षम बनाने के लिए कार्य करेगा।इसी प्रकार सीआईएफएफ साक्ष्य अभाव की पहचान कर, उन्हें पूरा करना और विभाग के साथ समन्वय कर नए साक्ष्य-आधारित दृष्टिकोण की व्यवहारिकता स्थापित करने का कार्य किया जाएगा।

श्री कुणाल ने यह भी बताया कि सीआईएफएफ सरकारी योजनाओं की गुणवत्ता और कवरेज में सुधार के लिए तकनीकी सहायता उपलब्ध करवायेगा। सीआईएफएफ लैंगिक समानता को बढ़ावा देने के लिए सामाजिक मानदंडों में बदलाव के दृष्टिकोण से कार्य करेगा।

शासन सचिव ने बताया कि राजस्थान सरकार अपने विभिन्न विभागों के माध्यम से इस एमओयू के तहत प्रस्तावित विभिन्न गतिविधियों के लिए कार्यान्वयन/कार्य योजनाओं की योजना के विकास में सीआईएफएफ को इनपुट प्रदान करेगी, जिस पर सीआईएफएफ कार्यान्वयन भागीदारों के साथ काम करेगा।

उल्लेखनीय है कि पूर्व में 2015 में 7 साल के लिए एमओयू साइन किया गया था जिसे फिर से 5 साल के लिए आगे बढ़ाने के लिए एमओयू हस्ताक्षरित किया गया है।

संक्षिप्त समाचार

भागवत कथा का निमंत्रण देने के लिए अयोध्या के लिए प्रस्थान

चमकता राजस्थान। जयपुर। भगवान श्री रामलला को श्रीमद् भागवत कथा का निमंत्रण देने के लिए अयोध्या के लिए प्रस्थान किया। संत ब्रह्मचारी गणेश चैतन्य महाराज के सानिध्य में भक्त राकेश जी महाराज (महंत श्री चमत्कार बालाजी धाम) निमंत्रण पत्र भगवान श्री गणेश का वैदिक पूजन कर भगवान गणेश जी को समर्पित कर, पंचदेवों का पूजन कर 11 भगवा ध्वज एवं डीजे के साथ पदयात्रा करते हुए अयोध्या यात्रा की शुरुआत की ।भाजपा वरिष्ठ नेता महेश बसावतिया, पतंजलि योगपीठ के प्रमोद बलौदा, राजेंद्र झेरली वाला (वरिष्ठ पत्रकार संपादक) शेखर सोनी, विकास सैनी, सुभाष सोनी, अजय सोनी, सुरेश जांगिड़,नवनिर्मित भगवान राम मंदिर में भक्तगण जाकर के भगवान को भी आमंत्रित करेंगे। बालाजी महाराज का विधिपूर्वक पूजन आरती हनुमान चालीसा पाठ के बाद प्रमोद महरिया, मुन्ना लाल महिचा, शेखर सोनी, सुरेश जांगिड़, विष्णु राव, जगदीश हालिया, सहित अनेक माता माता बहने शामिल पुष्प वर्षा करते हुए नाचते गाते हुए विदा किया ।

मुख्यमंत्री श्री भजनलाल शर्मा ने बीच रास्ते में काफिले को रोककर लिया चाय का आनंद

- मुख्यमंत्री की सादगी से अभिभूत हुए लोग

चमकता राजस्थान। जयपुर। मुख्यमंत्री श्री भजनलाल शर्मा ने सोमवार को एक कार्यक्रम से लौटते समय बीच रास्ते में रूक कर चाय की थड़ी पर आम आदमी की तरह चाय का आनंद लिया। श्री शर्मा ने थड़ी पर मौजूद लोगों से आत्मीयता से बात की। मुख्यमंत्री की सादगी देखकर लोग अभिभूत हो गए। इस दौरान सांसद श्री रामचरण बोहरा भी मुख्यमंत्री के साथ थे। मुख्यमंत्री ने कहा कि प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी द्वारा स्ट्रीट वेंडर को आर्थिक प्रोत्साहन देने के लिए पीएम स्ट्रीट वेंडर आत्मनिर्भर निधि योजना की शुरूआत की गई है। साथ ही, वोकल फॉर लोकल के द्वारा स्वदेशी उत्पादों को बढ़ावा दिया जा रहा है। उल्लेखनीय है कि इससे पहले भी मुख्यमंत्री लाल बत्ती पर आमजन की तरह ही अपना काफिला रोकने का निर्णय ले चुके है, जिससे आमजन को ट्रैफिक की परेशानी का सामना नहीं करना पड़े।

रिलायंस ने शुरू की 'वंतारा' पहल, पशुओं के बचाव, देखभाल, संरक्षण और पुनर्वास के लिए होगा काम

चमकता राजस्थान

जामनगर। रिलायंस इंडस्ट्रीज और रिलायंस फाउंडेशन ने सोमवार को 'वंतारा (जंगल का सितारा)' कार्यक्रम शुरू करने की घोषणा की. वंतारा कार्यक्रम भारत और विदेशों में घायल, दुर्व्यवहार और खतरे में पड़े जानवरों के बचाव, उपचार, देखभाल और पुनर्वास पर ध्यान केंद्रित करने के लिए एक व्यापक पहल है।

गुजरात में रिलायंस के जामनगर रिफाइनरी कॉम्प्लेक्स के ग्रीन बेल्ट के भीतर 3,000 एकड़ में फैले, वंतारा का लक्ष्य विश्व स्तर पर संरक्षण प्रयासों में अग्रणी योगदानकर्ताओं में से एक बनना है। जानवरों की देखभाल और कल्याण में अग्रणी विशेषज्ञों के साथ काम करके, वंतारा ने 3,000 एकड़ के विशाल स्थान को जंगल जैसे वातावरण में बदल दिया है, जो विभिन्न प्रजातियों के पनपने के लिए प्राकृतिक, समृद्ध और हरे-भरे आवास की नकल करता है।

इस अवसर पर बोलते हुए, अनंत अंबानी ने कहा, ''बहुत कम उम्र में मेरे लिए जो जुनून के रूप में शुरू हुआ, वह अब वंतारा और हमारी शानदार और प्रतिबद्ध टीम के

साथ एक मिशन बन गया है। हम भारत की गंभीर रूप से लुप्तप्राय प्रजातियों की रक्षा पर ध्यान केंद्रित कर रहे हैं। हम महत्वपूर्ण आवासों को बहाल करना और प्रजातियों के लिए तत्काल खतरों का समाधान करना चाहते हैं और वंतारा को एक अग्रणी संरक्षण कार्यक्रम के रूप में स्थापित करना चाहते हैं। हमें खुशी है कि हमारे प्रयासों को भारत और अंतरराष्ट्रीय स्तर पर मान्यता मिली है.''

अधिक जानकारी देते हुए अनंत अंबानी ने बताया की, ''भारत और दुनिया के कुछ शीर्ष प्राणीशास्त्र और चिकित्सा विशेषज्ञ हमारे मिशन में शामिल हुए हैं और हमें सरकारी निकायों, अनुसंधान और शैक्षणिक संस्थानों का सक्रिय सहयोग और मार्गदर्शन प्राप्त करने का सौभाग्य मिला है। वंतारा का लक्ष्य प्रशिक्षण, क्षमता निर्माण और पशु देखभाल बुनियादी ढांचे के मामले में भारत के सभी 150 से अधिक चिड़ियाघरों को बेहतर बनाने के लिए भारतीय चिड़ियाघर प्राधिकरण और अन्य संबंधित सरकारी संगठनों के साथ साझेदारी करना है। हमें उम्मीद है कि वंतारा विश्व स्तर पर आशा की किरण बनेगी और यह प्रदर्शित कर सकती है कि कैसे एक दूरदर्शी संस्थान वैश्विक जैव विविधता संरक्षण पहल में मदद कर सकता है,''

वंतारा, भारत में अपनी तरह की पहली पहल है, जिसे आरआईएल और रिलायंस फाउंडेशन के निदेशक मंडल के निदेशक अनंत अंबानी के उत्साही नेतृत्व में संकल्पित और जन्म दिया गया है। अंबानी जामनगर में रिलायंस के महत्वाकांक्षी नवीकरणीय ऊर्जा व्यवसाय का भी नेतृत्व कर रहे हैं, और उस क्षमता में, 2035 तक रिलायंस की 'नेट कार्बन जीरो' कंपनी बनने की यात्रा का नेतृत्व करने के लिए जिम्मेदार हैं। वंतारा का ध्यान अत्याधुनिक स्वास्थ्य देखभाल, अस्पतालों, अनुसंधान और शैक्षणिक केंद्रों सहित सर्वोत्तम श्रेणी के पशु संरक्षण और देखभाल प्रथाओं को बनाने पर केंद्रित है। अपने कार्यक्रमों के भीतर, वंतारा उन्नत अनुसंधान को एकीकृत करने और प्रतिष्ठित अंतरराष्ट्रीय विश्वविद्यालयों और संगठनों जैसे इंटरनेशनल यूनियन फॉर कंजर्वेशन ऑफ नेचर (आईयूसीएन) और वर्ल्ड वाइल्डलाइफ फंड फॉर नेचर (डब्ल्यूडब्ल्यूएफ) के साथ सहयोग पर भी ध्यान केंद्रित करता है। पिछले कुछ वर्षों में, कार्यक्रम ने 200 से अधिक हाथियों, और हजारों अन्य जानवरों, सरीसृपों और पक्षियों को असुरक्षित स्थितियों से बचाया है। इसने गैंडा, तेंदुआ और मगरमच्छ पुनर्वास सहित प्रमुख प्रजातियों में पहल की है।

भागवत कथा ज्ञान यज्ञ कथा के पांचवें दिन भगवान श्रीकृष्ण का जन्मोत्सव बड़े धूमधाम से मनाया गया

- नंद के आनंद भयो, जय कन्हैया लाल की जयघोष से वातावरण भक्तिमय हुआ।

चमकता राजस्थान

बालेर/विशाल अग्रवाल। बालेर कस्बे में स्थित शालाधाम हनुमानजी मंदिर परिसर मे चल रही श्रीमद्भागवत कथा ज्ञान यज्ञ के पांचवें दिन सोमवार को भगवान श्रीकृष्ण का जन्मोत्सव बड़ी धूमधाम से मनाया गया। श्री कृष्ण जन्मोत्सव की झांकी निकलते ही श्रद्धालु पुष्प की बर्षा करने लगे। जन्मोत्सव में संगीतकार टिंकू शर्मा, नेपाल सिंह, गणेश

तिवारी के स्वर भजनों पर मंगल परिवार एवं श्रोता मंत्रमुग्ध होकर खूब झूमे। भगवान श्रीकृष्ण के जयकारों व नंद के आनंद भयो जय कन्हैया लाल की जयघोष से वातावरण भक्तिमय हो गया। इस दौरान भगवान श्रीकृष्ण, देवकी-वासुदेव, नंदबाबा-यशोदा मैया, सहित अन्य झांकिया सजाई गई, झांकी कथा पांडल में आकर्षण का केंद्र रही। कथा वाचक पं. कृष्णानंद शास्त्री बालेर ने श्रद्धालुओं को कथा महत्व के बारे में बताते हुए भगवान श्रीकृष्ण की बाल लीलाओं का वर्णन कर धर्म, अर्थ, काम व मोक्ष की महत्ता पर विस्तार पूर्वक प्रकाश डाला। उन्होंने कहा कि जब-जब धरा पर अत्याचार, दुराचार पापचार बढ़ता है। तब -तब प्रभु का अवतार होता है। प्रभु का अवतार अत्याचार को समाप्त करने और धर्म की स्थापना के लिए होता है।इस दौरान उन्होंने राजाबली का वर्णन,सुर्य वंश का वर्णन, चंद्र वंश का वर्णन, सहित अन्य कथाओं के बारे में श्रद्धालुओं को बताया। के अंत मे आयोजक कैलाश मंगल, अशोक मंगल, दिनेश मंगल, विजय मंगल, दीपक मंगल, पायल मंगल सहित मंगल सपरिवार द्वारा सामूहिक आरती के बाद प्रसाद वितरण किया।। आचार्य हरिओम शरण शास्त्री ने बताया कि आज की कथा में माखन चोरी, गोवर्धन पूजा सहित कई लीलाओं का वर्णन होगा।

महिंद्रा ने शुरू की वर्ल्ड वाइड मूवर्स को 100 ब्लेज़ो 55टी 42 की डिलीवरी

- महिंद्रा ट्रक एवं बस डिविज़न (एमटीबीडी) ने आज वर्ल्ड वाइड मूवर्स प्राइवेट लिमिटेड को महिंद्रा ब्लेज़ोएक्स ट्रकों की चाभी सौंपी
- ब्लेज़ोएक्स रेंज के ट्रकों को बेजोड़ प्रदर्शन और विश्वसनीयता प्रदान करने के लिए डिज़ाइन किया गया है

चमकता राजस्थान। जैसलमेर। महिंद्रा समूह के अंग, महिंद्रा ट्रक एवं बस डिविज़न (एमटीबीडी) ने आज वर्ल्ड वाइड मूवर्स प्राइवेट लिमिटेड के प्रबंध निदेशक, श्री इंद्रप्रीत आनंद को महिंद्रा ब्लेज़ोएक्स ट्रकों की चाभी सौंपी। यह महिंद्रा की देश भर में लॉजिस्टिक्स परिचालन को बढ़ाने से जुड़े प्रयास की दिशा में महत्वपूर्ण उपलब्धि है।

ब्लेज़ोएक्स रेंज के ट्रक, शक्तिशाली 7.2 लीटर, हाई टॉर्क, लो आर/मिनट एमपावर फ्यूलस्मार्ट इंजन के साथ मल्टीमोड स्विच से लैस हैं, जो बेहतर प्रदर्शन और ईंधन दक्षता प्रदान करते हैं। ट्रक में एक ड्राइवर सूचना प्रणाली भी है जो वाहन के प्रदर्शन और चालक के व्यवहार की वास्तविक समय पर निगरानी करने में मदद मिलती है, जिससे सुरक्षित और कुशल संचालन सुनिश्चित होता है। इसके अलावा, इसमें अगली पीढ़ी की विशेषताएं और बेहतर उत्पादकता के लिए एक बेहतर केबिन है, जिसमें एर्गोनॉमिक रूप से डिजाइन की गई सीटें, पर्याप्त भंडारण स्थान और बेहतर विज़िबिलिटी (दृश्यता) शामिल है। लॉजिस्टिक्स संचालन की दक्षता को और बढ़ाने के लिए, महिंद्रा ने अपनी आईमैक्स (टअ) टेलीमैटिक्स प्रौद्योगिकी भी पेश की है, जो बेड़ा संचालन की वास्तविक समय के आधार पर निगरानी और अनुकूलन मदद करती है। यह प्रौद्योगिकी ग्राहकों को उनके बेड़े के प्रदर्शन के लिहाज़ से बेशकीमती जानकारी प्रदान करती है, ताकि वे सोच-समझ कर फैसला कर सकें और अपने मुनाफे को अधिकतम करने में मदद की जा सके। इस मौके पर, श्री जलज गुप्ता, बिजनेस हेड - वाणिज्यिक वाहन, महिंद्रा एंड महिंद्रा लिमिटेड ने कहा, ''हम इस गठजोड़ से उत्साहित हैं और वर्ल्ड वाइड मूवर्स प्राइवेट लिमिटेड को 100 ब्लेज़ोएक्स ट्रकों की डिलीवरी शुरू करने पर सम्मानित महसूस कर रहे हैं। कंपनी को अपने बेड़े में इन ब्लेज़ो एक्स ट्रकों को शामिल करने से अपने परिचालन को और अधिक अनुकूलित करने, दक्षता बढ़ाने और लागत कम करने में मदद मिलेगी। हम ऐसे असाधारण उत्पाद और सेवाएं प्रदान करने के लिए समर्पित हैं जो हमारे ग्राहकों की बढ़ती जरूरतों के अनुरूप हों और साथ ही भारतीय अर्थव्यवस्था के विकास में भी योगदान देते हों।

एमटीबीडी का सेवा नेटवर्क बढ़कर 400 से अधिक टच प्वाइंट का हो गया है, जिसमें 80 3एस डीलरशिप और 2900 से अधिक रोडसाइड असिस्टेंस सर्विस पॉइंट और पूरे देश में प्रमुख ट्रेकिंग मार्गों पर 1600 से अधिक खुदरा दुकानों का स्पेयर नेटवर्क शामिल है।

रोड़वेज मुख्यालय का औचक निरीक्षण

- गुणवतापूर्ण सर्विस डिलेवरी के लिए समयबद्ध तरीके से कार्यो का हो निष्पादन- अध्यक्ष रोडवेज

चमकता राजस्थान। जयपुर। परिवहन एवं सड़क सुरक्षा विभाग की अतिरिक्त मुख्यसचिव और रोडवेज अध्यक्ष श्रीमती श्रेया गुहा ने सोमवार को रोडवेज मुख्यालय का औचक निरीक्षण किया। श्रीमती गुहा ने कहा कि राज्य सरकार के गुणवत्तापूर्ण सर्विस डिलेवरी के लक्ष्य को हासिल करने के लिए सभी कार्यों का समयबद्ध निष्पादन बेहद आवश्यक है। इसके लिए कार्मिक समय पर कार्यालय में उपस्थित होकर सौ फीसदी आउटपुट दे। उन्होंने मुख्यालय पर स्वच्छता व्यवस्था सुनिश्चित करने, जर्जर कमरो की मरम्मत और रखरखाव एवं रंगरोगन के निर्देश भी दिए।इस दौरान उन्होने रिकॉर्ड रूम का अवलोकन कर फाईलों के उचित रखरखाव, पुरानी एवं अनुपयोगी फाईलों के निस्तारण के भी निर्देश दिए।

इस अवसर पर कार्यकारी निदेशक (प्रशासन) श्रीमती अनीता मीना, कार्यकारी निदेशक (यातायात) श्री नानूराम सैनी, कार्यकारी निदेशक (यांत्रिक) श्री रवि सोनी, सहित उच्च अधिकारी मौजूद रहें।

क्लाइमेट चेंज एक चुनौती है, प्लेनेट को इससे बचाने के लिए चुनौतियों से लड़ना होगा, रिस्पांसिबल टूरिज्म में राजस्थान अग्रणी प्रदेश बनने के लिए कार्य कर रहा है : उप मुख्यमंत्री दिया कुमारी

चमकता राजस्थान

जयपुर। उप मुख्यमंत्री दिया कुमारी ने कहा है कि क्लाइमेट चेंज एक चुनौती है इससे प्लेनेट को बचाने के लिए हमें युद्ध की तरह इन चुनौतियों से लड़ना होगा। उन्होंने कहा कि रिस्पांसिबल टूरिज्म में राजस्थान अग्रणी प्रदेश बनने के लिए कार्य कर रहा है।

उप मुख्यमंत्री ने पर्यटन विभाग और आउटलुक के समन्वय से सोमवार को इंडियन रिस्पांसिबल टूरिज्म स्टेट सम्मिट एंड अवॉर्ड्स राजस्थान 2023 के सेकंड एडिशन के जयपुर स्थित होटल में आयोजित समारोह को मुख्य अतिथि के रूप में सम्बोधित करते हुए उक्त विचार व्यक्त किए।

दिया कुमारी ने संबोधन में कहा कि हमें प्लास्टिक के उपयोग से बचना चाहिए, सोलर एनर्जी की ओर बढ़ना चाहिए, पानी और बिजली बचाने होगी, पर्यावरण को बचाना होगा, ऑर्गेनिक चीजों के उपयोग को बढ़ावा देना होगा और रिसायकल और रियूज पर लक्षित होना होगा तभी हम हमारी धरती मां को बचा सकते हैं। पर्यटन स्थलों पर सभी तरह की सुविधाएं विकसित हो। पर्यटकों को किसी भी तरह की परेशानी न

हो, उन्हें संपूर्ण आतिथ्य का भाव की अनुभूति हो यह रिस्पांसिबल टूरिज्म की अवधारणा है। उन्होंने रिस्पांसिबल टूरिज्म को बढ़ाने के लिए सभी मीडिया हाउसों का भी आवाहन किया कि वे बेहतर मीडिया कवरेज अपना योगदान दें।

उप मुख्यमंत्री ने कहा कि पर्यटन से जुड़े प्रत्येक मुद्दे को ध्यान में रखते हुए रिस्पांसिबल टूरिज्म स्टेट के रूप में उभरना हमारा लक्ष्य है। उन्होंने पर्यटन से जुड़े विभिन्न क्षेत्रों के लोगों का स्वागत करते हुए कहा कि आप सब अपने-अपने क्षेत्र में बहुत अच्छा काम कर रहे हैं। उन्होंने कहा कि रिस्पांसिबल टूरिज्म अवार्ड के द्वितीय संस्करण में इस बार 400 प्रविष्टियां आई है जो कि पिछले साल 100 ही थी। राजस्थान का रिस्पांसिबल टूरिज्म स्टेट के रूप में उभरने का यह एक बेहतर उदाहरण है, लेकिन इस क्षेत्र में अभी बहुत काम किया जाना बाकी है। जिस पर हम सबको मिलकर काम करना होगा और राज्य को पर्यटन की दृष्टि से सिरमौर बनने के लिए हर बेहतर प्रयास किया जाना है।

पर्यटन विभाग की निदेशक डॉ. रश्मि शर्मा ने समारोह में सहभागियों का धन्यवाद दिया और कहा कि आप सब के योगदान से इस तरह के आयोजन कर हम पर्यटन के विकास के लिए लगातार काम करेंगे। उन्होंने जूरी का धन्यवाद दिया कि पारदर्शिता के साथ पुरस्कारों के योग्य प्रतिभगियों चयन किया।

इस अवसर पर आउटलुक ग्रुप के सीईओ इंद्रानी रॉय ने कहा कि रिस्पांसिबल पर्यटन आज के समय की जरुरत है। मीडिया को भी इसको बढ़ावा देने के लिए कार्य किया जाना चाहिए। उन्होंने कहा कि राजस्थान टूरिज्म ने इस जिम्मेदारी को समझा है और शानदार काम किया जा रहा है। उन्होंने कहा कि पर्यटन से जुड़ी प्रत्येक छोटे से छोटी चीज का ध्यान रखकर ही रिस्पांसिबल टूरिज्म को आगे बढ़ाया जा सकता है।

समारोह में पर्यटन विभाग की संयुक्त निदेशक सुमीता सरोच, पुनीता सिंह, उपनिदेशक दिलीप सिंह, उपेंद्र सिंह शेखावत तथा अन्य वरिष्ठ विभागीय अधिकारी उपस्थित रहे।

स्वामी, मुद्रक एवं प्रकाशक अभय सिंह चौहान के लिए एम बी प्रिंटर्स, सी 74 सुदर्शन पूरा, जयपुर से मुद्रित एवं 1ए देवी नगर विस्तार, देवी नगर गली नं. 6 जयपुर 302019 से प्रकाशित। सम्पादक : अभय सिंह चौहान,
मोबाइल : 9314505000 (पीआरबी एक्ट के तहत खबरों के चयन के लिए जिम्मेदार) संपादक : खलील कुरैशी, मोबाइल : 7891542929